हिन्दी दैनिक

जौनपुर, लखनऊ व भदोहीं से प्रकाशित

देश की उपासना

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

dku live &
dkunews24

वर्ष : 04 अंक–90 : जौनपुर, मंगलवार 24 मई 2022 सान्ध्य दैनिक (संस्करण) पेज –4 मूल्य : 2 रूपया

राज्यपाल के अभिभाषण पर की गयी चर्चा : सदन में मौजूद रहे सीएम योगी आदित्यनाथ

लखनऊ ब्यूरो : यूपी में 18वीं विधानसभा के पहले सत्र के दूसरे दिन विधानमंडल में राजनीति दलों के नेताओं ने राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा की। इस दौरान सदन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व सदन के नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव मौजूद रहे। सोमवार को अपने अभिभाषण में विधानमंडल के दोनों सदनों को संबोधित करते हुए राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने कहा कि बीते पांच वर्षों में योगी सरकार 1.0 ने प्रदेश में विकास की नींव डालने का काम किया था और आगामी पांच वर्षों में सरकार इस पर विकास की भव्य इमारत खड़ी करेगी। उन्होंने कहा कि सरकार प्रदेश के विकास के लिए निवेश बढ़ाने, आधारभूत संरचना सुदृढ़ करने व प्रदेश को देश का अग्रणी राज्य बनाने का कार्य कर रही है। सरकार ने सेक्टरवार 100 दिन, छह माह, एक, दो व पांच साल की कार्ययोजना

तैयार की है। विकास को नई ऊंचाइयां देने के लिए परियोजनाओं के क्रियान्वयन की टाइमलाइन तय करते हुए कार्य किए जाएंगे। सरकार परफॉर्मेंस आधारित कार्यों पर फोकस करेगी।

आर्बिट्रेशन के निष्पादन वादों के निस्तारण के लिये 29 मई 2022 को आयोजित होगी विशेष लोक अदालत

जौनपुर सू.वि. : माननीय उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली व माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद के निर्देशानुसार राष्ट्रीय व राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा दिये गये निर्देशानुसार जनपद न्यायालय जौनपुर में 29 मई 2022 को एक विशेष लोक अदालत का आयोजन आर्बिट्रेशन के निष्पादन वादों का सुलह समझौते के माध्यम से निस्तारण कराये जाने हेतु किया जायेगा। उक्त विशेष लोक अदालत माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जौनपुर के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में आयोजित की जायेगी इसमें वादकारीगण न्यायालय में आकर आर्बिट्रेशन एण्ड कन्शीलिएशन एक्ट के अन्तर्गत निष्पादन वादों को सुलह–समझौतें के आधार पर निस्तारित करा सकते हैं। उक्त जानकारी सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण शिवानी रावत ने दी।

पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवक व युवतियों हेतु संचालित ओ–लेवल एवं सी.सी.सी. कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना की होगी 28 मई अन्तिम तिथि

जौनपुर सू.वि. : जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी सुरेश कुमार मौर्य ने अवगत कराया है कि उत्तर प्रदेश शासन पिछड़ा वर्ग कल्याण अनुभाग–2 के शासनादेश द्वारा पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवक/युवतियों के लिए संचालित ओ–लेवल एवं सी.सी.सी. कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना को वित्तीय वर्ष 2022–23 हेतु ऑनलाईन संचालित की जा रही है। वर्ष 2022–23 में इस योजना के अन्तर्गत भारत सरकार की अधिकृत संस्था 'नीलिट' से मान्यता प्राप्त संस्थाओं द्वारा अन्य पिछड़े वर्ग के युवक/युवतियों को 'ओ' लेवल एवं सी.सी.सी. कम्प्यूटर प्रशिक्षण कराने हेतु संबंधित जनपदों में आवेदन किया जा सकता है। ऑनलाईन आवेदन किये जाने की संशोधित तिथि 23 मई 2022 से 28 मई 2022 तक होगी। पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग उ0प्र0 की वेबसाइट https%//backwardwelfareup.gov.in पर दिये गये लिंक एवं https%//obccomputertraining.upsdc.gov.in से निर्धारित प्रारूप पर संस्था द्वारा ऑनलाईन आवेदन किया जा सकता है। इस हेतु दिशा–निर्देशध्समय–सारणी उक्त वेबसाइट पर प्रदर्शित कर दी गयी है। आवेदन करने के उपरांत संस्था द्वारा ऑनलाईन भरे गये आवेदन की प्रति डाउनलोड कर प्रिंट आउट प्राप्त कर हस्ताक्षरित करते हुए समस्त अभिलेखों तथा उपलब्ध संसाधनों से संबंधित विवरण सहित कार्यालय जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, जौनपुर में 28 मई 2022 सायं 5:00 बजे तक अनिवार्य रूप से हार्ड कॉपी उपलब्ध करायी जाये। संस्था द्वारा ऑनलाईन आवेदन में भरी गयी सूचना एवं उपलब्ध कराये गये अभिलेखों का परीक्षण तथा संस्था की आधारभूत संरचनाओं का भौतिक सत्यापन कराते हुए निदेशक, पिछड़ा वर्ग कल्याण की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु संस्थाओं का चयन किया जायेगा।

नगर पालिका परिषद,शाहाबाद के तानाशाही पूर्ण रवैए से नागरिकों में आक्रोश

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : समाजसेवी अधिवक्ता एवं भारत विकास परिषद के सचिव बसंत गुप्ता ''मानव'' ने कहा है कि शाहाबाद में जब जब होंगी समस्याएं आम जनता की,तब तब होगे समाधान के प्रयास हमारे। शाहाबाद में नगर पालिका परिषद शाहाबाद के द्वारा चलाए जा रहे गैर विधिक अतिक्रमण अभियान के वावत शाहाबाद के व्यापारियों व जनता के साथ मिलकर एक ज्ञापन उपजिलाधिकारी शाहाबाद सौरभ दुबे को दिया ,जिसके वावत उपजिलाधिकारी शाहाबाद ने आम जनमानस को यह भरोसा दिलाया,शाहाबाद के किसी व्यापारी व जनमानस के साथ अन्याय नहीं होगा ,उपजिलाधिकारी ने यह भी बताया कि अब एक एक सड़क को चिन्हाकित कर अतिक्रमण हटाया जाएगा व जो नोटिस आम जनमानस को जारी किए गये है उनसे भयभीत न हों अब नोटिसों का उपजिलाधिकारी स्वयं संज्ञान लेंगे।ज्ञापन दाताओं में खतीव अहमद खां,रामजी गुप्ता,गोपाल गुप्ता,अशफाक खां, खालिद,सुवीन,राजेश गुप्ता सिपला,एवं तमाम व्यापारी और नागरिक शामिल रहे।यहां उल्लेखनीय है कि अल्हापुर में अतिक्रमण हटाने को लेकर नगर पालिका परिषद के अधिशाषी अधिकारी संजय कुमार,सफाई

निरीक्षक दीपक कुमार, नातिक एवं असद हुसैन खां के तानाशाही पूर्ण रवैए से उपजे असंतोष ने नगर पालिका परिषद के प्रशासन को हिलाकर रख दिया है।यहां नागरिकों का आरोप है कि अमीरों को छोड़कर सिर्फ गरीबों पर कहर बरपाना कहां का न्याय है।

आईपीएस पीएसी कमांडेंट डाक्टर राजीव नारायण मिश्र :परोपकारी व आध्यात्मिक एवं कर्तव्यनिष्ठा से परिपूर्ण व्यक्तित्व

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) सरकारी तंत्र में पुलिस विभाग की भी एक अहम् भूमिका होती है।इस विभाग के अधिकारी व कर्मी के कंधो पर ही देश के अंदर के लोगों की सुरक्षा,समाज में कानून व्यवस्था लागू करना व फरियादियो को त्वरित न्याय प्रदान करने का दायित्व होता है।इतनी सब जिम्मेदारी होने के बाद भी अगर कोई आईपीएस अधिकारी समाज सेवा,कोविड काल में मरीजो की जान की रक्षा करने के साथ साथ आध्यात्म से जुड़े रहना, अपने आप में बहुत ही सराहनीय कार्य है।जी हाँ हम बात कर रहे हैं वर्ष 1998 बैच के पीपीएस व वर्ष 2010 के आईपीएस कैडर के अधिकारी कानपुर देहात के मूल निवासी डॉ राजीव नारायण मिश्र जी की।मालूम हो कि आईपीएस अधिकारी डॉ राजीव नारायण मिश्र जिनकी तैनाती प्रदेश के एसटीएफ विभाग में एसपी के रूप में 2010 हुई।जिसका दायित्व उन्होंने बखूबी कर्तव्य निष्ठा के साथ निभाया।वही इस दौरान उन्होंने कई ऐसे कारनामे भी किए जिसके चलते उन्हें राष्ट्रपति,राज्यपाल,पुलिस महानिदेशक द्वारा कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।उन्होंने गाजियाबाद में बहुचर्चित एचसीएल इंजीनियर के अपहरण की गुत्थी को सुलझाने का काम किया वहीं दूसरी तरफ जब वे वर्ष 2002 से 2006 तक अति संवेदनशील जिला अयोध्या जनपद में सीओ सिटी के रूप में अपने कर्तव्य के दायित्व का निर्वहन कर रहे थे।उस समय राम नगरी अयोध्या में एक ऐसी घटना घटी जिसे आज तक अयोध्या जनपद के लोग नहीं भूल पा रहे हैं।हम बात कर रहे हैं 5 जुलाई वर्ष 2005 को सुबह 9:00 बजे उस समय जब चौका देने वाली खबर आई थी कि एक वाहन से भारी मात्रा में राकेट लांचर, हैंड ग्रेनेड व भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थों के साथ पांच आतंकवादी राम जन्मभूमि परिसर की ओर जा रहे है जैसे ही इनको सूचना मिली तो इन्होंने अपने जन एक कार्बाइन लेकर खुद सेनानायक के रूप में घटनास्थल पर पहुंचकर सीआरपीएफ पीएसी व नागरिक पुलिस की संयुक्त टीम के साथ मिलकर उन पांचों आतंकवादियो को अपनी सूझबूझ व सीआरपीएफ,पीएसी व नागरिक पुलिस की संयुक्त टीम के सहयोग से कड़ी मुठभेड़ में मार गिराया। जिससे अयोध्या में एक बड़ी अनहोनी घटना होने से बचा लिया।इसके लिए अभी तक आईपीएस अधिकारी डाक्टर मिश्र की तारीफ अयोध्या जिले की जनता करती है।देश की उपासना हिंदी समाचार पत्र अयोध्या ब्यूरो चीफ राजेश श्रीवास्तव से खास बातचीत में उन्होने बताया कि इसी तरह की एक गुत्थी उन्होने तब सुलझाने का कार्य किया जब वे एस पी एसटीएफ थे,तब उस समय एक एचसीएल इंजीनियर के अपहरण की गुत्थी भी उन्होंने सुलझाए थे,उन्होंने यह भी बताया कि कोविड–19 काल में उन्होंने व उनके टीम के माध्यम से लोगों की काफी

–देश की उपासना हिंदी दैनिक समाचार पत्र परिवार की ओर से अयोध्या ब्यूरो चीफ राजेश श्रीवास्तव ने आईपीएस व पीएसी कमांडेंट वाराणसी डा.मिश्र को प्रदान किया स्मृति चिन्ह

देश की उपासना हिन्दी दैनिक एवं मासिक तथा साप्ताहिक समाचारपत्र परिवार की ओर से अयोध्या जिले के ब्यूरो चीफ राजेश श्रीवास्तव द्वारा 34 वी बटालियन पीएसी कंपनी कमांडेंट वाराणसी आईपीएस अधिकारी डाक्टर राजीव नारायण मिश्र से उनके आवास मुलाकात कर उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। मुलाकात के दौरान उन्होने देश की उपासना समाचार पत्र एवं डीकेयू लाईब चैनल के माध्यम से जूडें हुए सभी सम्मानित संपादक /ब्यूरो चीफ एवं संवाददाताओं को बधाई दिया गया इस मौके पर उन्होने फोन से देश की उपासना समाचार पत्र के संपादक जी से वार्ताकर उन्हें समाचार पत्र के सफल प्रकाशन पर शुभकामनाएं दी गई। उन्होने कहा कि वास्तव में देश की उपासना समाचार पत्र वर्तमान परिवेष में देश के विकास में समर्पित समाचार पत्र के क्षेत्र में एक अलग क्षवि के साथ समाज के सभी वर्गों की समस्याओं को उजागर कर सरकार व प्रशासन तक पहुँचाकर उन समस्याओं का समाधान करानें में अहम भूमिका निभा रहा है, और सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है। हम इसके उज्वल भविष्य की कामना करतें हैं।

मदद पहुंचाई गई साथ ही साथ 34 वीं बटालियन कंपनी मे हॉस्पिटल की व्यवस्थाओ को भी मुहैया कराया गया और इसके साथ –साथ पीएसी कैंप में संचालित जो एंबुलेंस की व्यवस्थाएं थी उससे भी लोगों को काफी राहत पहुंचाया गया मालूम हो कि आईपीएस डॉ राजीव नारायण मिश्र के कार्य कुशलता को देखते हुए शासन ने उन्हें लगातार दो बार से प्रयागराज में होने वाले कुंभ मेले का दायित्व सौंप रही है, जिसे वे अपनी सूझबूझ व टीम के द्वारा बखूबी ढंग से संपन्न कराते आ रहे है, इनके लिए सबसे बड़ी चुनौती का कार्य था, जब उनको प्रयागराज में होने वाले कुंभ स्नान को लेकर शान्ति और सुरक्षा बहाल रखना था, उन्होंने अपनी सूझबूझ से इस पर्व को भी बखूबी संपन्न कराया इसी तरह इनका जहां एक तरफ पुलिसिंग व्यवस्था के साथ–साथ लोगों की सेवा की तरफ भी भावना रहती है वहीं दूसरी तरफ वह अपने व्यस्ततम समय में कुछ समय निकालकर आध्यात्मिक की तरफ भी लगाते हैं। मालूम हो कि कमांडेंट डाक्टर मिश्र इससे पहले ,मध्य प्रदेश में पीसीएस सेवा मे प्रोफेसर के रूप में भी समाज में अपना योगदान दे चुके है।

आईपीएस डॉ राजीव नारायण मिश्र पुलिस सेवा में एक मिशाल बन चुके है देश की उपासना परिवार को देश के ऐसे सपूतो पर नाज है।

जिला कारागार जौनपुर का भौतिक रूप से निरीक्षण एवं विधिक साक्षरता शिविर का किया गया आयोजन

जौनपुर सू.वि. : उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार एवं माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जौनपुर के निर्देशों एवं अनुमति से कोविड–19 के दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में सचिव पूर्णकालिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जौनपुर श्रीमती शिवानी रावत द्वारा 24 मई 2022 को जिला कारागार, जौनपुर का भौतिक रूप से निरीक्षण एवं विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। निरीक्षण के दौरान महिला बैरक में महिला बन्दियों की समस्याएं तथा जेल अस्पताल में भर्ती बन्दी मरीजों का हाल–चाल पूछा गया। बन्दियों को विधिक एवं मौलिक अधिकारों की विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान करायी गयी तथा बताया गया कि ऐसे बन्दी जो अपने वादों में पैरवी हेतु व्यक्तिगत अधिवक्ता करने में अक्षम है वे अपने मामलों में निःशुल्क पैरवी हेतु जेल अधीक्षक के माध्यम से प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किये जाने पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा मामलों में पैरवी हेतु निःशुल्क अधिवक्ता प्रदान किया जायेगा। उन्हें बताया गया कि ऐसे सिद्धदोष बन्दी जो अपने मामलों में उच्च न्यायालय में अपील करने में अक्षम हों वह कारागार अधीक्षक के माध्यम से अपने प्रार्थना पत्र जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में प्रस्तुत कर सकते हैं। जेल अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि उपरोक्त प्रकार के प्रकरण संज्ञान में आने पर तुरन्त जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को अवगत कराना सुनिश्चित करें। समयपूर्व रिहाई के पात्र बन्दियों को चिन्हित कर उनके प्रार्थना पत्र तैयार कर नियमानुसार अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रेषित किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। जेल अधीक्षक द्वारा बताया गया कि जिला कारागार में कुल 1171 बन्दी है, जिनमें 160 पुरूष तथा 02 महिला सिद्धदोष बन्दी हैं तथा 892 पुरूष तथा 57 महिलाएँ एवं 30 अल्पवयस्क विचाराधीन बन्दी हैं। कारागार में निरूद्ध महिला बन्दियों के साथ कुल 10 बच्चे हैं। महिला बन्दियों के साथ रह रहे बच्चों के नाश्ता, भोजन आदि की उपलब्धता के सम्बन्ध में पूँछे जाने पर महिला बन्दियों द्वारा बताया गया कि बच्चों को समय से नाश्ता एवं भोजन उपलब्ध कराया जाता है। जेल अस्पताल के निरीक्षण में साफ–सफाई में कमियों की तरफ इंगित करते हुए साफ–सफाई की व्यवस्था का कड़ाई से पालन करने हेतु जेल अधीक्षक को निर्देशित किया गया। अधीक्षक द्वारा यह भी बताया गया कि बन्दियों के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण हेतु जिला चिकित्सालय से चिकित्सकों की एक टीम का गठन भी किया गया है जिनके द्वारा प्रत्येक बुधवार को बन्दियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है। इस अवसर पर जेल अधीक्षक एस0के0 पाण्डेय, जेलर कुलदीप सिंह भदौरिया, डिप्टी जेलर अमित कुमार वर्मा, चिकित्सा अधिकारी डा0 रविराज, फार्मासिस्ट सतीश कुमार गुप्ता व प्रमोद कुमार मौर्य तथा जेल पी0एल0वी0 गण व अन्य उपस्थित रहे।

आवश्यक सूचना

आप सभी पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि आनलाइन समाचार पत्र पढ़नें और ई–पेपर का लाभ लेने हेतु हमारे निम्नांकित वेबसाइट एवं न्यूज पोर्टल - dku live चैनल पर सम्पर्क कर लाभ उठायें– उ0प्र0 के सभी जनपदों एवं तहसीलों से पत्रकार बननें के लिए सम्पर्क करें–

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

–संपादक

शिक्षाशास्त्र विषय की प्रायोगिक परीक्षा 26 को

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी कालेज के बी0ए0 प्रथम वर्ष शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थियों की प्रायोगिक परीक्षा आगामी 26 मई दिन गुरुवार को महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग में प्रातः 09:00 बजे से प्रारम्भ होगी। सभी विद्यार्थी अपने प्रवेश पत्र और प्रोजेक्ट फाइल के साथ समय से अनिवार्य रूप से उपस्थित होंगे। यह जानकारी शिक्षाशास्त्र विभाग के असि0 प्रोफेसर डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव ने दी।

शहीद सराभा जी के 126 में जन्म दिवस पर दी पुष्पांजलि : खोसला

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। राष्ट्रीय सैनिक संस्था एनसीआर के संयोजक राजीव जोली खोसला ने अमर शहीद करतार सिंह सराभा को पुष्पांजलि अर्पित की और कहा कि शहीद करतार सिंह सराभा का जन्म 24 मई 1896 लुधियाना के सराबा जिले में एक जाट सिख परिवार में हुआ मात्र 19 वर्ष की उम्र में ही ब्रिटिश हुकूमत ने फांसी के फंदे पर चढ़ा दिया था 16 नवंबर 1915 सेंटर जेल लाहौर मैं उन्हें फांसी दे दी गई आज भी हम उन्हें याद करते हैंकरतार सिंह सराभा की यह गजल भगत सिंह को बेहद प्रिय थी वे इसे अपने पास हमेशा रखते थे और अकेले में अक्सर गुनगुनाया करते थे:

''''यहीं पाओगे महशर में जबां मेरी बयाँ मेरा, मैं बन्दा हिन्द वालों का हूँ है हिन्दोस्तां मेराय मैं हिन्दी ठेठ हिन्दी जात हिन्दी नाम हिन्दी है, यही मजहब यही फिरका यही है खानदां मेराय मैं इस उजड़े हुए भारत का यक मामूली जर्रा हूँ, यही बस इक पता मेरा यही नामो–निशाँ मेरा! मैं उठते–बैठते तेरे कदम लूँ चूम ऐ भारत! कहाँ किस्मत मेरी ऐसी नसीबा ये कहाँ मेराय तेरी खिदमत में अय भारत! ये सर जाये ये जाँ जाये, तो समझूँगा कि मरना है हयाते–जादवां मेरा''.

आज सभी भारतीयों को गरम दल क्रांतिकारी शहीदों पर नाज है जिनकी बदौलत हम आजादी की सांस ले रहे हैं आजादी हमें चड़के से नहीं मिली आजादी मिली गरम दल क्रांतिकारी वीरों की शहादत से उनकी सोच से नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नारे से तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा आज हर भारतीय को उनके दिखाए हुए नक्शे कदम पर चलना चाहिए।

राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन आज से : 10 जून को होगा मतदान

लखनऊ ब्यूरो : राज्यसभा के लिए उत्तर प्रदेश की 11 सीटों पर हो रहे चुनाव के लिए मंगलवार को अधिसूचना जारी होने के साथ ही नामांकन दाखिल करने का सिलसिला शुरू हो जाएगा। नामांकन 31 मई तक दाखिल किए जा सकेंगे। एक जून को नामांकन पत्रों की जांच होगी और 3 जून तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। 10 जून को सुबह 9 से शाम 4 बजे तक मतदान होगा और शाम 5 बजे से मतगणना होगी। बता दें, राज्यसभा में यूपी से 31 सांसद हैं। इनमें से 11 सदस्यों का कार्यकाल 4

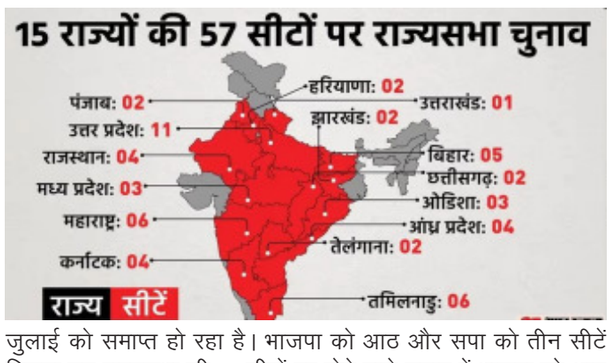

जुलाई को समाप्त हो रहा है। भाजपा को आठ और सपा को तीन सीटें मिलना तय राज्यसभा की 11 सीटों पर होने वाले चुनाव में भाजपा को आठ और सपा को तीन सीटें मिलना तय है। विधानसभा में भाजपा गठबंधन के 273 और सपा गठबंधन के 125 विधायक हैं। जनसत्ता दल लोकतांत्रिक और कांग्रेस के दो–दो तथा बसपा का एक विधायक है। जनसत्ता दल के दो विधायकों का समर्थन भाजपा को मिल सकता है। जबकि कांग्रेस और बसपा का किसी भी दल से गठबंधन नहीं होने से दोनों दल चुनाव से बाहर रह सकते है। सूत्रों के मुताबिक एक सीट के लिए 36 विधायकों का वोट चाहिए। भाजपा के पास 273 विधायक है, ऐसे में उन्हें प्रथम और द्वितीय वरीयता क्रम के मतदान के आधार पर 8 सीट जीतने में कोई परेशानी नहीं होगी। सपा के पास 125 विधायक हैं। इस आधार पर उसे 3 सीट जीतने में कोई दिक्कत नहीं है।

facebook YouTube WhatsApp twitter Instagram

–सुविचार–

जिस हाथ से अच्छा कार्य हो, वह हाथ तीर्थ है।

–साभार ज्ञानामृत पत्रिका

सम्पादकीय

कला की दुनिया और नवाचार

ध्रुपद गायकों को लगता है कि वे ध्रुपद की शिखरशून्यता के स्तर से गिरकर अशुद्ध हो जाएंगे और ख्याल गायकों को लगता है कि ध्रुपद गाएंगे, तो कौन सुनेगा! भेदभाव का यह कदाचार प्राचीन भारतीय संस्कृति का समीचीन व्यवहार तो नहीं कहा जा सकता। नाटक का सरकारी विद्यालय हिंदी भाषी रंगकर्म में पिछले सत्तर वर्षों से यह दावा तो करता आ रहा कि उसने हिंदी रंगमंच को नया सौष्ठव और आधुनिक रूप दिया।

कदाचारी मन अभिचार और नवाचार के आंगन में भी प्रवेश करेगा, तो सबसे पहले उसकी बुद्धि कदाचार में सक्रिय होगी। जब से आयोजनों से लेकर पारिश्रमिक तक की व्यवस्थाएं ऑनलाइन हुई हैं, पैसे के कदाचार को जैसे नई पोशाक मिल गई है। सरकारी विश्वविद्यालयों के पिछले दो वर्षों में हुए वेबिनार और सरकारी साहित्य, कला, संगीत आदि अकादमियों के आयोजनों एवं वहां की पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री के साथ हुए ऐसे नवाचार के अगणित उदाहरण अब नित्य क्रिया हैं।

यह भारतीय समाज में गणित का नया पाठ्यक्रम है। ऐसी गणितीय प्रवृत्ति हमारी संस्कृति को नए ढंग से देखने को हमें प्रवृत्त करती है। हमारा ध्यान ऐसी कला प्रवृत्तियों की ओर जा पाता है, जहां पहले जाना था। जैसे, संगीत का भारतीय समाज यह जानता है कि मुगल काल के पहले से ध्रुवपद (ध्रुपद) भारत का शास्त्रीय या उच्चांग संगीत है। इसी कारण बांग्ला में आज भी ख्याल गायन को ध्रुपदी संगीत कहते हैं। भारतीय संगीत का आध्यात्मिक गौरव और इसकी शैलीगत शुद्धता ध्रुवपद में ही है।

मुगल काल में इस शास्त्रीय संगीत का रूप बदला और इसे ख्याल कहा गया। इस प्रकार गायन के एक ही शास्त्रीय यानी शास्त्र आधारित संगीत की दो शैलियां स्वतंत्र भारत में हमें मिलीं, ध्रुपद और ख्याल। जब भारत को मुगलों से मुक्ति मिली, और जब वह अंग्रेजों से भी स्वतंत्र हुआ, तो कलाकारों और संगीत संस्थाओं को ध्रुपद की फिर से वही गरिमा लौटानी थी, जो नौवीं शती से पहले तक थी! लेकिन हुआ यह कि बीसवीं शती के आरंभ से ही देश ख्याल संगीत से समृद्ध होता रहा और ध्रुपद पृष्ठभूमि में ही रहा।

स्वतंत्र भारत में इसे फिर से महत्व देने की सदिच्छा से ध्रुपद के दो बड़े आयोजन क्रमशः वृंदावन और काशी में शुरू किए गए, साथ में ग्वालियर घराने द्वारा ख्याल को सम्मान देने के लिए एक आयोजन की शुरुआत ग्वालियर में भी की गई। नतीजा इस रूप में शुभ रहा कि ध्रुपद के प्रायः सभी घरानों और बानियों के कलाकारों को रसिकों तक अपनी साधना परंपरा को ले जाने का अवसर मिलता रहा। लेकिन इस नवाचार से दो अभिचार घटे। वृंदावन का आयोजन हमेशा के लिए बंद हुआ।

कलाकार सिर्फ दो आयोजनों और विदेशी जिज्ञासुओं तक सीमित और अर्थबद्ध होते गए। और दूसरा यह कि, ख्याल के भारतीय कलाकारों एवं रसिकों द्वारा देश मे ख्याल आयोजनों की भरमार कर दी गई। पिछले सत्तर वर्षों में शास्त्रीय संगीत के अधिकांश श्रोता ख्याल अधिक, ध्रुपद कम सुनते रहे। इतना तक तो फिर भी ठीक था, लेकिन हुआ कुछ यों कि बीते चालीस वर्षों में दृश्य यह बना है कि श्रोताओ में ध्रुपद सुनने का अब कोई आग्रह ही नहीं रहा, जबकि वे ही श्रोता ख्याल के अधिकाधिक श्रोता होते गए हैं।

वे कुमार गंधर्व या अश्विनी भिडे को तो बार–बार सुनना चाहते हैं, लेकिन ध्रुपद कलाकार को कतई नहीं। शास्त्रीय संगीत के अधिसंख्य श्रोताओं में ध्रुपद के प्रति ऐसी उपेक्षा, उदासीनता और नापसंदगी कभी सोची भी नहीं जा सकती थी। ध्यान इस प्रवृत्ति की ओर जाता है कि यदि ख्याल और ध्रुपद, दोनों शास्त्रीय संगीत हैं, तो ध्रुपद गायक ख्याल क्यों नहीं गाते और ख्याल गायक ध्रुपद गाना क्यों नही पसंद करते!

ध्रुपद गायकों को लगता है कि वे ध्रुपद की शिखरशून्यता के स्तर से गिरकर अशुद्ध हो जाएंगे और ख्याल गायकों को लगता है कि ध्रुपद गाएंगे, तो कौन सुनेगा! भेदभाव का यह कदाचार प्राचीन भारतीय संस्कृति का समीचीन व्यवहार तो नहीं कहा जा सकता। नाटक का सरकारी विद्यालय हिंदी भाषी रंगकर्म में पिछले सत्तर वर्षों से यह दावा तो करता आ रहा कि उसने हिंदी रंगमंच को नया सौष्ठव और आधुनिक रूप दिया। इस दृष्टि से वह एकमात्र सत्ता है, जिसके बिना भारतीय रंगकर्मी की कोई साख या पहचान नहीं।

फिर पिछले चालीस सालों से यह स्थिति क्यों बनी हुई है कि हिंदी रंगमंच के पास दर्शक नहीं और रंगकर्म करके कलाकार अपनी आजीविका नहीं चला सकता। स्वयं इस विद्यालय के नाट्य प्रदर्शनों के टिकट कभी बिकते नहीं देखे गए। तो फिर जनता के पैसे और सरकार के अभिचार के बूते पल्लवित नाट्यविद्यालय ने देश के रंग जगत को क्या दिया, सिवाय नवाचार की भाषा मे रंगकर्मी को बेरोजगार बनाने के! सरकारी कला मंडपों में कला को यदि आर्थिक और सांस्कृतिक कदाचार के गणित ने विस्थापित न किया होता, तो सरकारी पैसे का कभी अपव्यय नहीं होता।

नवाचार को प्रोत्साहित करने के उत्साह में हम नवाचार के मुखौटे में छिपी कदाचार की कलाकारी को नहीं पहचान रहे। कई बार इस दुर्नीति को अपदस्थ करने की नीयत से नई संस्कृति नीति की रूपरेखा बनाई गई, लेकिन विफल होने के अभिचार में कौन–सा नाटक किन कलाकारों को लेकर खेला गया, उनका परिचय मंच पर कला के दिग्गज निर्देशक ही दे सकते हैं। साहित्य, फिल्म, रूपंकर कला और मंचकला के संगठन, भवन, पुरस्कार, अनुदान राशि, रंगमंडल, कला शिविर और शिक्षण संस्थान सभी अपने–अपने अभिचार में व्यस्त हैं। दृश्य बदलने कवि आए या मनुष्य, यह भी अगले नवाचार का विषय हो सकता है।

ये लेखक के अपनें विचार हैं।

आउटसोर्सिंग व संविदा कर्मचारियों की सेवानियमावली प्रख्यापन में शिथिलता बरतने पर राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद ने सरकार के प्रति व्यक्त की नाराजगी

लखनऊ डीकेयू ब्यूरो : ऐसे कर्मचारियों को विनियमित करने तथा न्यूनतम वेतन ,भत्ते देने व मृतक आश्रित नियमावली की सुविधाएं दिये जाने का प्रस्ताव परिषद द्वारा माह फरवरी 2019 में ही शासन को प्रेषित किया जा चुका है राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद की मांग पर तत्कालीन मुख्य सचिव डॉ अनूप चंद्र पांडे की अध्यक्षता में दिनांक 09 अक्टूबर 2018 को हुई बैठक में सहमति व्यक्त करते हुए अपर मुख्य सचिव नियुक्ति एवं कार्मिक को निर्देश दिया था कि विभागों में भारी संख्या में एजेंसी के माध्यम से रखे गए कर्मचारियों की सेवा सुरक्षा, विनियमितीकरण, न्यूनतम वेतन व भत्ते देने हेतु सेवा नियमावली 03 माह में तैयार कर मंत्रिमंडल के समक्ष प्रस्तुत कर प्रख्यापित कर लिया जाए क्योंकि ऐसे कर्मचारियों को पूरा वेतन नहीं मिलता तथा एजेंसी जब चाहती है उन्हें हटा देती है। उनका भविष्य अंधकार में है। परिषद के अध्यक्ष श्री सुरेश रावत एवं महामंत्री श्री अतुल मिश्रा ने अनुरोध किया था कि ऐसे नियुक्ति कर्मियों को सेवा सुरक्षा ,न्यूनतम वेतन ,भत्ते, बोनस ,बीमा, पेंशन, मृतक आश्रित नियमावली का लाभ आदि सभी सुविधाएं अनुमन्य की जाए तथा विभागों में उनकी वरिष्ठता सूची बनाई जाए। श्री अतुल मिश्रा ने बताया है कि परिषद के अथक प्रयासों से कार्मिक विभाग द्वारा मसौदा तैयार किया गया जिसकी एक प्रति दिनांक 13 फरवरी 2019 को तत्कालीन अपर मुख्य सचिव कार्मिक श्री मुकुल सिंघल जी द्वारा परिषद को उपलब्ध कराई गई और परिषद का मत चाहा। जिसपर परिषद द्वारा समयक परीक्षणोपरांत दिनांक 22 फरवरी 2019 को कुछ सुविधाओं को जोड़ने का प्रस्ताव देते हुए पत्र प्रेषित कर दिया गया। उपरोक्त सुविधाएं देने का प्रावधान नियमावली में प्रस्तावित किया जाना है। 1. आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु सेवायोजन कार्यालय में अपना रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य होगा। 2. सेवा प्रदाता को भी रजिस्ट्रेशन कराना होगा। 3. ऐसे कर्मचारियों को एजेंसी सेवा से पृथक नहीं कर पाएगी। यदि किसी को अनुशासनात्मक कारणों से सेवा मुक्त करना होगा तो उसके लिए नियुक्ति अधिकारी की अध्यक्षता में समिति दोनों पक्षों को सुनकर निर्णय करेगी। 4. कर्मचारियों के न्यूनतम वेतन/भत्ते अनुमन्य किए जाएं साथ ही वार्षिक वेतन वृद्धि दी जाए। 5. सिलेक्शन कमेटी द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि जिन संवर्गों की सेवा नियमावली प्रसख्यापित है उन संवर्गों के लिए आउटसोर्सिंग पर नियुक्ति प्रदान करने में सेवा नियमावली में प्रदत्त अर्हता के अनुसार नियुक्ति की जाए। 6. संतोषजनक कार्य करने पर कार्मिकों का नवीनीकरण सुनिश्चित किया जाए। 7. नियमित नियुक्तियों में आउटसोर्सिंग कार्मिकों है तो स्टाफ नर्स व एएनएम की भांति वरीयता कोटा निर्धारित किया जाए। 8–वर्तमान समय में प्रायःयह देखा जा रहा है कि आउट सोर्स कार्मिकों को दिए जाने वाले पारिश्रमिक की धनराशि जितनी निश्चित की जाती है वास्तविक रूप से कार्मिकों को भुगतान उससे काफी कम किया जाता है चर्चा करने पर यह स्थिति सामने आती है कि कार्मिक की निर्धारित मजदूरी से ही इपीएफ के दोनों शेयर ईएसआई का शेर तथा सर्विस प्रोवाइडर का कमीशन काट लिया जाता है उदाहरण स्वरूप यदि सरकार किसी आउट सोर्स कार्मिकों के नाम पर रुपया 15000 प्रतिमा सर्विस प्रोवाइडर को भुगतान करती है तो उस कार्मिक को वास्तविक रूप से 9 या ध्र10000 ही मिलते हैं यह स्थिति उचित नहीं है क्योंकि प्रस्ताव में इसका उल्लेख किया गया है इसे स्पष्ट किया जाए तथा आउट सोर्स कार्मिक को वास्तविक रूप से भुगतान की जाने वाली ध्र ानराशि को ही उसके पारिश्रमिक के रूप में दर्शाया जाए। 9. इन कर्मचारियों के नियुक्ति के आदेश जारी किए जाएंगे तथा उनकी उपस्थिति रजिस्टर में दर्ज होगी। 10. ऐसे कर्मचारियों को साप्ताहिक तथा आकस्मिक अवकाश मेडिकल लीव छुट्टियां भी मिलेंगी। 11. ऐसे कर्मचारियों के परिवार को सेवाकाल में मृत्यु पर मृतक आश्रित नियमावली के तहत समी सुविधाएं देने का प्राविधान किया जाए। 12.आउटसोर्सिंग/संविदा कर्मचारी नियमित रिक्त पदों पर नहीं रखे जाएंगे उन पर नियमित नियुक्तियां की जाएंगी। उपरोक्त पर आश्वस्त किया गया कि आपका प्रस्ताव भी इसमे शामिल कर लिया जायेगा यह नियमावली लेबर एक्ट तथा वेतन आयोग की संस्तुतियों को दृष्टिगत रखते हुए तैयार की जा रही है जिसका अंतिम रूप बहुत जल्द तैयार करके मंत्रीपरिषद के समक्ष अनुमोदन उपरांत प्रस्तुत किया जाएगा अनुमोदन हो जाने पर नियमावली प्रक्षेपित कर दी जाएगी। श्री मिश्रा ने खेद प्रकट किया कि मुख्य सचिव द्वारा तीन महीने का समय इस नियमावली को प्रख्यापित कर शासनादेश करने हेतु निर्धारित किया था पर तीन वर्ष से अधिक व्यतीत हो जाने के उपरांत भी अभी तक निर्णय नहीं हो पाया जिससे कर्मचारियों में आक्रोश व्याप्त होना स्वाभाविक है । यदि सरकार व शासन कर्मचारियों के हितार्थ उनकी समस्याओं के निस्तारण में गति नही दी जाएगी तो निश्चित रूप से कर्मचारियों की भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए एक बड़े आंदोलन के लिए बाध्य होना पड़ेगा । श्री मिश्रा ने बताया कि नियमावली न होने की वजह से एजेंसियों द्वारा कई वर्षो से कार्यरत कर्मचारियों का रिनीवल करने में भारी मात्रा में धन उगाही की जा रही है, उनके वेतन का भुगतान समय से नही हो रहा यहा तक कि राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान ,बल विकास पुष्टाहार ,स्वास्थ्य विभाग सहित आदि विभागों में कार्यरत कर्मचारियों के वेतन का भुगतान कई माह से लम्बित है। इनका पी एफ काटा जा रहा पर न जमा हो रहा न रसीद दी जा रही । 10 वर्षो से कार्यरत कर्मचारियों के वेतन में कोई बढ़ोतरी नही हुई और एजेंसी बदल जाने पर वेतन भी डूब गया । आज के परिवेश में नवयुवक कर्मियों के शोषण को रोकने के लिये नियमावली का शीघ्र प्रख्यापन अतिआवश्यक है । राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के अध्यक्ष सुरेश रावत व महामंत्री अतुल मिश्रा ने मुख्यमंत्री एवं मुख्य सचिव से मांग की है कि परिषद के साथ संपन्न हुई बैठकों में लिये गये निर्णयों की समीक्षा आवश्यक है कि समयबद्ध निर्णयों में इतना विलम्ब क्यो और इस नियमावली का प्रख्यापन माह जून में अवश्य करा दें जिससे कर्मचारियों के शोषण पर विराम लग सके और उनका भविष्य को अंधकारमय से बचाया जा सके।

भारत भारती पार्टी द्वारा लखनऊ में विभिन्न जगहों पर बड़े मंगल के अवसर पर भंडारे का किया गया आयोजन

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। भारत भारती पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह के द्वारा पार्टी के पदाधिकारियों को अपने–अपने वार्डो में भंडारे का आयोजन किए जाने का निर्देश दिया गया। इस क्रम में इंदिरा नगर में सुरेश तिवारी, गोमती नगर में सुजीत श्रीवास्तव, अलीगंज में रमेश वर्मा, आलमबाग में अनुष्का त्रिपाठी, राजाजीपुरम में कन्हैया लाल, जानकीपुरम में विनोद बंसल, राजेश अग्रवाल, सदर कैंट में अच्छे वर्मा, चौक में विशाल टंडन अन्य विभिन्न जगहों पर भंडारे का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि बड़े मंगल के बाद भी महीने

के एक मंगल को लखनऊ के विभिन्न जगहों पर भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा और जरूरतमंद लोगों की सेवा भी पार्टी के सभी पदाधिकारी करेंगे।

पात्र गृहस्थी राशन कार्डो के पात्र व आपात्र के सम्बन्ध में शासनादेश में विस्तृत मानक निर्धारित : जिलाधिकारी

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने अवगत कराया है कि वर्तमान में राशन कार्ड सत्यापन/निरस्तीकरण हेतु की जा रही कार्यवाही के सम्बन्ध में इलेक्ट्रानिक एवं प्रिन्ट मीडिया पर अनेक तथ्यहीन एवं भ्रामक खबरे प्रकाशित की जा रही है। पात्र गृहस्थी राशन कार्डो के पात्र व आपात्र के सम्बन्ध में शासनादेश में विस्तृत मानक निर्धारित किये गये है, उन मानको का कोई पुनः निर्धारण नही किया गया है। राशनकार्ड समर्पित किये जाने सम्बन्ध में पूर्व में जारी प्रेस नोट दिनांक 28 अप्रैल 2022 को एतद्वारा निरस्त करते हुए अवगत कराना है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 के अन्तर्गत उपर्युक्त शासनादेश में प्राविधानित ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में राशनकार्ड की पात्रता सूची से निष्कासन के आधार निम्नलिखित है – नगरीय क्षेत्र (एक्सक्लूजन काइटेरिया) – समस्त आयकर दाता, ऐसे परिवार जिसके किसी भी सदस्य के पास चार पहिया वाहन अथवा वातानुकूलन यंत्र (एयर कंडिशनर) अथवा 5 केवीए या उससे अधिक क्षमता का जेनरेटर हो, ऐसा परिवार जिसके किसी सदस्य के स्वामित्व में अकेले या अन्य सदस्य के साथ 100 वर्ग मी0 से अधिक का स्वअर्जित आवासीय प्लाट या उस पर स्वनिर्मित मकान अथवा 100 वर्ग मीटर से अधिक कार्पेट एरिया का आवासीय फ्लेट। ऐसा परिवार जिसके किसी सदस्य के स्वामित्व में अकेले या अन्य सदस्य के साथ 80 वर्ग मी0 या उससे अधिक कार्पेट एरिया का व्यवसायिक स्थान हो, ऐसे परिवार जिनके समस्त सदस्यों की आय रू. 3.00 लाख प्रति वर्ष से अधिक हो, ऐसे परिवार जिनके सदस्य के पास एक से अधिक शस्त्र का लाईसेन्स/शस्त्र हों। ग्रामीण क्षेत्र (एक्सक्लूजन काइटेरिया) – समस्त आयकर दाता, ऐसे परिवार जिसके किसी भी सदस्य के पास चार पहिया वाहन अथवा ट्रैक्टर अथवा हार्वेस्टर अथवा वातानुकूलन यंत्र (एयर कंडिशनर) अथवा 5 केवीए या उससे अधिक क्षमता का जेनरेटर हों, ऐसा परिवार जिसके किसी सदस्य के अकेले या अन्य सदस्य के स्वामित्व में 05 एकड़ से अधिक सिंचित भूमि हों, ऐसे परिवार जिनके समस्त सदस्यों की आय रू. 2.00 लाख प्रति वर्ष से अधिक हों, ऐसे परिवार जिनके सदस्य के पास एक से अधिक शस्त्र का लाईसेन्स/शस्त्र हों। यह भी स्पष्ट किया जाता है कि सरकारी योजनान्तर्गत पक्का मकान, विद्युत कनेक्शन, एकमात्र शस्त्रधारक, मोटरसाईकिल स्वामी, मुर्गीपालन व गौ–पालन होने के आधार पर किसी भी कार्डधारक को अपात्र घोषित नहीं किया जा सकता है। अपात्र राशनकार्डो के निरस्तीकरण की कार्यवाही सत्यापन के उपरान्त शासनादेशानुसार निर्धारित क्राइटेरिया के अन्तर्गत की जायेगी।

यदि राजनितिक पार्टियों में गठबंधन हो सकता है तो धर्म गुरुओ में क्यों नहीं

आर एल पाण्डेय नई दिल्ली। धार्मिक सदभावना एवं विश्व शांति केंद्र के मुख्य संरक्षक आर्कबिशप दिल्ली अनिल जोसेफ थॉमस कुट्टो , विश्व शान्ति केंद्र और अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक अध्यक्ष आचार्य डा लोकेश मुनि , गुरु ग्रन्थ साहब वतसक मसतिम डपेपवद के अध्यक्ष सरदार सतनाम सिंह उप्पल , तिब्बतन सरकार की संसद के पूर्व स्पीकर आचार्य येशी फुनशोक , बहाई धर्म के राष्ट्रिय ट्रस्टी डा ए के मर्चेन्ट , विश्व आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री माया प्रकाश , इमाम संगठन के उपाध्यक्ष मोहम्मद जावेद कासमी,स्वामी सम्पूर्णानन्द , स्वामी गोस्वामी जी महाराज , राष्ट्र धर्म के प्रतीक वीर चक्र प्राप्त कर्नल तेजेंद्र पाल त्यागी , धार्मिक सद्भावना एवं विश्व शान्ति केंद्र के सचिव श्री राजीव खोसला और श्रीमती उर्वसी वालिया ने देश में सदभावना और समन्वय का सन्देश पूरे सदन को दिया । उन्होंने देश में पीस कीपिंग फोर्स की स्थापना की भी बात कही और यह काम राष्ट्रिय सैनिक संस्था को देने का प्रस्ताव रखा । आर्कबिशप अनिल जोसेफ थॉमस कुट्टो ने ओपनिंग एड्रेस देते हुए कहा की आज शान्ति और समन्वय की चिल्लाती हुई आवश्यकता है । धार्मिक सद्भावना एवं विश्व शान्ति केंद्र के वरिष्ठ उपाध्यक्ष फादर जेड एस पिटर , फादर अजित , फादर फिलिक्स , श्रीमती शैली , श्रीमती अनुरंजना त्यागी , श्रीमती

मंजू , सरदार जे एस लेखी , श्री वेद प्रकाश , न्यायधीश श्री धवन ने अपनी भाषा में देश में समन्वय और शान्ति स्थापन का सन्देश दिया। आचार्य लोकेश मुनि जी ने कहा की यदि राजनैतिक पार्टिया गठबंधन बना सकती है तो क्या धर्म गुरुओ को एक ऐसा गठबंधन नहीं बनाना चाहिए जिसका मुख्य उदेश्य देश में धार्मिक सद्भावना और शान्ति स्थापित करना हो। पूरे सदन ने इस प्रस्ताव का करतल ध्वनी से स्वागत किया।इस समबन्ध में जल्दी ही गृह मंत्री से मुलाकात की जायेगी। धार्मिक सद्भावना एवं विश्व शान्ति केंद्र की स्थापना भारत के सर्वोच्च न्यायधीश श्री एम ध्न वेंकटचेल्लैया ने की थी। इस संगठन में सभी धर्मो के धर्म गुरु जुड़े हुए है। कर्नल तेजेंद्र पाल त्यागी महासचिव, उर्वशी वालिया सचिव वित्, राजीव जोली खोसला प्रशासनिक सचिव ने उक्त जानकारी दी।

शिवपाल सिंह यादव की आजम खां के साथ गोपनीय बैठक : आधे घंटे तक हुई चर्चा

लखनऊ ब्यूरो : यूपी में बजट सत्र शुरू हो चुका है। इसके साथ ही राजनीतिक गतिविधियां भी जारी हैं। सीतापुर जेल से आने के बाद आजम खां लगातार चर्चा में हैं। सोमवार को वह विधानमंडल की कार्यवाही में शामिल नहीं हुए। सोमवार शाम को शिवपाल सिंह यादव व आजम खां की गोपनीय बैठक हुई। शिवपाल आजम के सरकारी आवास पहुंचे थे। दोनों के बीच करीब आधे घंटे तक चर्चा हुई। बताया जा रहा है कि आजम व शिवपाल ने राज्यसभा चुनाव से लेकर मौजूदा सत्र पर चर्चा की। शिवपाल सिंह यादव, आजम खां को लेकर अखिलेश यादव के साथ ही मुलायम सिंह यादव पर भी हमलावर रहे हैं। उन्होंने कहा था कि आजम को जेल से निकलवाने के लिए सपा ने पूरा प्रयास नहीं किया। आजम ने शपथ ली, सदन में नहीं आए 26 माह के बाद जेल से रिहा हुए सपा विधायक आजम खां और उनके विधायक पुत्र अब्दुल्ला आजम ने सोमवार को विधानसभा सदस्य की शपथ ली। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने उन्हें शपथ दिलाई। आजम शपथ लेने के बाद लौट गए, वे राज्यपाल के अभिभाषण के दौरान सदन में मौजूद नहीं रहे। जबकि उनके बेटे अब्दुल्ला सदन में मौजूद थे। अखिलेश और अब्दुल्ला आजम के बीच हुई चर्चा सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव एवं स्वार विधायक अब्दुल्ला आजम के बीच सोमवार दोपहर करीब 20 मिनट तक बातचीत हुई। इसके बाद सपा अध्यक्ष पार्टी कार्यालय चले गए। विधानसभा में शपथ ग्रहण

करने के बाद आजम खां चले गए, लेकिन उनके बेटे अब्दुल्ला आजम सदन में मौजूद रहे। सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने उन्हें अपने पास बुलाया फिर दोनों विधान मंडल में मौजूद पार्टी कार्यालय पहुंचे। यहां दोनों करीब 20 मिनट तक बंद कमरे में बातचीत किए। इस बातचीत को आजम खां की नाराजगी की चर्चाओं के लिहाज से अहम माना जा रहा है। हालांकि दोनों तरफ से मंत्रणा के संबंध में कुछ भी कहने से इनकार किया गया है। विधानसभा में प्रवेश करते वक्त आजम खां ने भी किसी तरह की नाराजगी से इनकार किया। हालांकि मुलायम सिंह यादव से बातचीत होने के सवाल पर उन्होंने सधे अंदाज में तंज कसा। कहा कि हो सकता है कि उनके पास हमारा फोन नंबर न हो। आजम खां के दोपहर बाद सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव से मुलाकात की चर्चा थी, लेकिन वह बिना मिले लौट गए। आजम के नजदीकी लोगों का कहना है कि उनकी सेहत ठीक नहीं थी।

पुलिस बोर्ड लगाकर कर रही हेलमेट पहनने के लिए जागरूक

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना)।पिहानी पुलिस ने लोगों को हेलमेट लगाने को जागरूक करने के लिए एक अनूठी पहल शुरू की है। ग्रामीण व कस्बे के चौराहों पर स्लोगन व नियमों के बोर्ड लगाकर लोगों को हेलमेट के प्रति जागरूक कर रही है। पुलिस की ओर हेलमेट लगाने के लिए में जागरूकता बोर्ड लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। बोर्ड में लिखे गए स्लोगन लोगों को यातायात के नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित कर रहे है। बोर्ड पर छपी बच्चों की ओर से मार्मिक अपील 'पापा मोटरसाइकिल चलाने पर हेलमेट जरूर लगाना, आप मेरा भरोसा हो' ने लोगों के दिल को छू लिया। मौजूद लोगों ने पुलिस को आश्वासन दिया कि वह हेलमेट अवश्य लगाएंगे। कोतवाल डीके सिंह में शासन व प्रशासन के मन्सानुकूल कार्य करते हुए कस्बा इंचार्ज प्रवीण कुमार ,उप निरीक्षक नरेंद्र सैनी , हेड मोहर्रिर राजेंद्र सैनी, , उप निरीक्षक अनिल सिंह एसएसआई रमेश सिंह, विनोद त्रिपाठी समेत कई पुलिसकर्मी जगह जगह बोर्ड लगवा कर हेलमेट के लिए लोगों को जागरूक कर रहे हैं। पुलिस की इस पहल की लोगों ने खूब सराहना की। पुलिस की ओर से इन दिनों यातायात के दौरान हेलमेट पहनने, ओवरलोडिंग, नशा करके वाहन चलाने जैसे विषयों पर बस स्टैंड ,सल्लिया रोड ,बंदर पार्क समेत 15 जगहों पर लगाए जा रहे हैं। बोर्ड में छपे स्लोगनों का इस प्रकार चयन किया गया है, जिस पर न चाहते हुए भी लोगों का ध्यान चला जा रहा है। हेलमेट है जरूरी, न समझो मजबूरी। सड़क सुरक्षा नियमों का करो सम्मान, दुर्घटना में न गंवाओ अपनी जान जैसे स्लोगन लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। बस स्टैंड पर राहगीर ने फ्लैक्स पर छपे स्लोगन की मोबाइल से फोटो खींचते नजर आए।

हेलमेट आइएसआइ मार्ध्क्ड होना क्यों जरूरी कोतवाल डीके सिंह ने बताया कि सरकार ने बिना आइएसआइ मार्का हेलमेट की बिक्री पर सितंबर माह से रोक लगा दी है। ऐसे में जो भी हेलमेट बेचे जा रहे हैं वह आइएसआइ मार्क वाले ही हैं। इसमें लगा शीशा अच्छी क्वालिटी का और मजबूत होता है। इसकी विजिबिलिटी भी क्लियर होती है। इसे पहनने के बाद बाहर की आवाज सुनाई पड़ती है। यहां उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि पिहानी कोतवाली के अंतर्गत 37 सड़क हादसे हुए थे जिनमें 18 लोगों को जान गंवानी पड़ी। इनमें 50 फीसद ऐसे थे जिन्होंने हेलमेट या सीट बेल्ट नहीं लगाए थे। सर्वे के दौरान पाया गया है कि हेलमेट और सीट बेल्ट लगाने पर सड़क हादसे में 50 से 60 फीसद मृत्यु की संभावना कम हो जाती है।

गोदभराई कर गर्भवती को कई प्रकार के पौष्टिक आहार बांटे

जौनपुर सू.वि. : जिला प्रोबेशन अधिकारी अभय कुमार के निर्देशन में मिशन शक्ति 4.0 के तहत महिला शक्ति केंद्र की टीम ने कांशीराम आवास परिसर स्थित आंगनबाड़ी केंद्र पर गोद भराई कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान गर्भवती को टोकरी में कई प्रकार के पौष्टिक भोज्य पदार्थ जैसे अनाज, फल, हरी सब्जी, पुष्टाहार व अन्य चीजें बांटी गईं। महिला शक्ति केंद्र की टीम ने गर्भावस्था के दौरान प्रसव तथा पूरी जांचों के बारे में बताया। बताया गया कि आयोडीनयुक्त नमक का प्रयोग, आयरन फोलिक एसिड गोली का सेवन गर्भावस्था के दौरान किस तरह से स्वास्थ्य की मदद करते हैं। इसके अलावा पौष्टिक आहार आदि के बारे में भी विस्तार से बताया गया। महिला शक्ति केंद्र की जिला समन्वयक प्रतिभा सिंह ने महिलाओं के हित में चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना के तहत सरकार माताओं को 6,000 रुपये की धनराशि देती है। यह सहायता उसे तीन किस्तों में मिलती है। इसके लिए गर्भ धारण करने के 150 दिनों के अंदर किसी भी सरकारी स्वास्थ्य इकाई में पंजीकरण कराकर जरूरी दस्तावेज देने पड़ते हैं। जिला समन्वयक बबीता ने बताया कि बेटियों की पढ़ाई के लिए मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना संचालित है। इसके

तहत बेटी के जन्म से लेकर 12वीं तक की पढ़ाई उत्तर प्रदेश सरकार कराती है। बेटी के जन्म पर कन्या सुमंगला योजना के तहत 2,000 रुपये की धनराशि मां के खाते में भेजी जाती है। उसके बाद एक वर्ष तक का टीकाकरण पूर्ण होने पर 1,000 रुपये। कक्षा एक में प्रवेश के बाद 2,000 रुपये, कक्षा छह में प्रवेश के बाद 2,000 रुपये, नौंवी में प्रवेश के बाद 3,000 रुपये की धनराशि, 10वीं व 12वीं के बाद डिप्लोमा कोर्स या स्नातक में प्रवेश लेने पर सरकार 5,000 की धनराशि उसके खाते में भेजती है।

सर्टिफिकेट के नाम पर पैसा लेनें का आरोप लगाने वाला मुकरा

जौनपुर सू.वि. : पैसा लेकर दिव्यांगजन सर्टीफिकेट बनाने की शिकायत मिलने पर मुख्य चिकित्साधिकारी (सीएमओ) डॉ लक्ष्मी सिंह मौके पर पहुंच गईं। उन्होंने अधिकारियों–कर्मचारियों से पूछताछ के बाद आरोप लगाने वाले से सम्पर्क किया लेकिन वह आरोप से मुकर गया। मामला सोमवार दिन में 12 से एक बजे के करीब का है। सीएमओ डॉ लक्ष्मी सिंह के मोबाइल पर एक व्यक्ति ने फोनकर पैसा लेकर विकलांग सर्टिफिकेट बनाये जाने की शिकायत की। शिकायत सुनते ही सीएमओ मौके पर पहुंच गईं। उन्होंने विकलांग बोर्ड के अध्यक्ष अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ एससी वर्मा से पूछा यहां पर पैसे लेकर विकलांग सर्टिफिकेट बन रहा है। डॉ एससी वर्मा ने कहा कि मैं तो विकलांग सर्टीफिकेट बनाए जाने वाले दिन लाभार्थियों को बार–बार चेतावनी जारी कराता रहता हूं कि आप लोग किसी दलाल के चक्कर में न पड़िये। अपना काम स्वयं करवाइये। यहां सर्टिफिकेट बनवाने के पैसे नहीं लिए जाते। इस पर उन्होंने मेडिकल बोर्ड के एक–एक पटल पर बैठे कर्मचारियों से इस बारे में पूछताछ की। सभी ने आरोपों को नकार दिया। इसके बाद उन्होंने शिकायत करने वाले नम्बर पर सम्पर्क किया तो उसने कहा कि मेरे परिचित ने मुझे ऐसा बताया। सीएमओ ने आरोप लगाने वाले को अपने उस परिचित को बुलाने के लिए कहा जिससे इस बात का पता चल सके कि कौन पैसे की मांग करता है जिससे उसके ऊपर कार्रवाई की जा सके। शिकायतकर्ता उसे बुलाने की लिए भी तैयार नहीं हुआ। लोगों से बातचीत में पता चला कि शिकायतकर्ता विकलांग है और दूसरों का सर्टिफिकेट बनवाने के लिए आता रहता है। किसी न किसी बात पर धौंस जमाता रहता है। बावजूद इसके सीएमओ ने एक–एक कर्मचारियों को शिकायत मिलने पर कार्रवाई करने की चेतावनी दी। उन्होंने ड्रग इंस्पेक्टर को कार्यालय पर चौनल गेट लगवाने, सोमवार के दिन पानी की व्यवस्था कराने और पंखे की व्यवस्था कराने का निर्देश दिया।

जिलाधिकारी द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सोंधी व शाहगंज का किया गया निरीक्षण

जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा के द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सोंधी/शाहगंज का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी के द्वारा उपस्थिति पंजिका देखी गई, जिसमें सभी कर्मचारी उपस्थित मिले। जिलाधिकारी ने दवाओं की उपलब्धता के संबंध में जानकारी फार्मासिस्ट राजेंद्र प्रसाद से ली, जिस पर फार्मासिस्ट द्वारा बताया गया कि इलाज से संबंधित सभी आवश्यक दवाई उपलब्ध है, कुत्ते की सुई पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। जिलाधिकारी ने दवाइयों के अच्छे से रख–रखाव हेतु निर्देशित किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा ईलाज कराने आई बिंदु राजभर, सुमन गुप्ता, नगीना देवी से बारी–बारी जानकारी ली कि उन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर इलाज में किसी भी प्रकार की समस्या तो नहीं आ रही है, जिस पर उन्होंने बताया कि चिकित्सकों के द्वारा अच्छे से इलाज किया जाता है। लैब के निरीक्षण के दौरान लैब टेक्नीशियन गुलाब चंद यादव से पूछा कि प्रतिदिन कितने टेस्ट होते हैं जिस पर उन्होंने बताया कि प्रतिदिन 25 टेस्ट होते हैं। जिलाधिकारी द्वारा निर्देश दिया गया कि उनके द्वारा किये जाने वाले टेस्ट को बोर्ड पर प्रदर्शित किया जाए। वैक्सीन कक्ष में जाकर कोविड–19 व अन्य वैक्सीन की उपलब्धता व रख–रखाव के संबंध में जानकारी ली। जिलाधिकारी द्वारा प्रभारी चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया गया कि प्रसव कक्ष के सामने टीन शेड, वाटर कूलर एवं मरीजों के बैठने के लिए कुर्सी लगाए जाने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य केंद्र पर जो भी पुराने फर्नीचर व अन्य सामग्री है उन्हें निष्प्रयोज्य कर दिया जाए। प्रभारी चिकित्सा अधिकारी के द्वारा अवगत कराया गया कि स्वास्थ्य केंद्र के पीछे की जमीन कुछ लोगों के द्वारा कब्जा कर लिया गया है, जिस पर उपजिलाधिकारी को निर्देश दिया की जमीन की नाप कराकर कब्जा मुक्त कराया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य केंद्र पर आने वाले सभी मरीजों से अच्छा व्यवहार रखते हुए इलाज किया जाए। उन्हें किसी भी प्रकार की समस्या न हो। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी बी.बी सिंह, उपायुक्त मनरेगा भूपेंद्र सिंह, डॉ मसूद अहमद सहित अन्य उपस्थित रहे।

एलपीसीपीएस में डिग्री वितरण समारोह सम्पन्न

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। एलपीसीपीएस मे डिग्री वितरण समारोह विनम्र खण्ड गोमती नगर स्थित लखनऊ पब्लिक कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज में डिग्री वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ0 शकुंतला मिश्रा पुनर्वास राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ राणा कृष्ण पाल सिंह थे। डिग्री वितरण समारोह में बैच 2014–2017, 2015 – 2018. 2016–2019 और 2017–2020 में उत्तीर्ण हुए बच्चो को अंगवस्त्र देकर डिग्री प्रदान की गई। मुख्य अतिथि डॉ राणा कृष्णा पाल सिंह ने सभी बच्चों को उनके उज्ज्वल

भविष्य की शुभकामनाएं दी । इस अवसर पर निदेशक गरिमा सिंह, प्रधानाचार्य डॉ0 अनिल सिंह, डीन डॉ0 लक्ष्मी शंकर अवस्थी, शिक्षक समुदाय एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

जमीनी विवाद के निस्तारण के लिए बन्दोबस्ती नक्शा ही मान्य : तहसीलदार

जौनपुर पत्रकार धनंजय विश्वकर्मा : शाहगंज तहसील क्षेत्र के पोटरिया गांव में जमीनी विवाद को लेकर काफी दिनों से बंसराजी के पति बाबूराम गौतम निवासी उपरोक्त ने तहसील का चक्कर लगा रहे थे।मंगलवार को शाहगंज तहसील से राजस्व विभाग तहसीलदार महेंद्र बहादुर सिंह, कानूनगो रामचन्दर, लेखपाल उपेन्दर कुशवाहा, रामविलास, निशा प्रिदर्शनी, व अभिषेक, सुनील कुमार यादव ग्राम प्रधान (जर्रो) सहित स्थानीय लोग मौजूद रहे। बाबूराम ने अपने आ0संख्या के नक्शा का नकल रखे थे, उस नक्शे को तहसीलदार महेंद्र बहादुर सिंह के समक्ष पेश किया तो उन्होंने बताया कि यह सही नहीं है,उन्होंने अपने नक्शे से मिलान किया तो सही नहीं पाया और मौके पर तहसीलदार महेंद्र बहादुर सिंह ने आराजी संख्या 659,567,और 665 का मुआयना करके बताया कि हमारा कपड़े पर निर्मित नक्शा ही सही है जो बन्दोबस्ती नक्शा है इसी का मान्य सर्वोच्च है और अन्य नक्शा सही नहीं है। और उक्त विवादित जमीन की माप, का

आश्वासन देते हुए तहसीलदार ने कहा कि टीम गठित कर कल गांव के सरहद से माप की जाएगी, जिससे विवाद का पूर्ण रूप से समाधान हो सके। यह कह कर के वापस चले गए और वही बाबूराम ने आरोप लगाया कि उपरोक्त जमीन की आज ही माफ हो जानी चाहिए था लेकिन तहसीलदार ने कल का हवाला देते हुए चले गए।

एक जून को मुख्यमंत्री रखेंगे राममंदिर के गर्भगृह की आधारशिला

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या)सूत्र के मुताबिक रामलला के नवनिर्मित भवन के गर्भगृह की आधारशिला एक जून को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा अभिजीत मुहूर्त में रखी जायेगी।मुख्यमंत्री योगी वैदिक ब्राह्मणों की मौजूदगी में रामलला के नवनिर्मित भवन के गर्भ गृह का पूजन–अर्चन करेंगे। इसके बाद राम जन्मभूमि परिसर से सटे हुए दक्षिण भारतीय शैली पर बने रामलला सदन देवउत्थान ट्रस्ट का उद्घाटन भी करेंगे। रामलला सदन देव उत्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष जगद्गुरु राघवाचार्य ने मुख्यमंत्री को इसके लिए निमंत्रण भेज दिया है।गर्भगृह स्थल के आसपास के क्षेत्र में 30 मई तक 21 फुट ऊंचे प्लिंथ के पत्थरों लगाए जाने कार्य पूरा कर लिया जाएगा। जून माह से मंदिर निर्माण का कार्य भी प्रारम्भ हो जाएगा। गर्भगृह की आधारशिला रखने के कार्यक्रम के तहत सुबह 9 बजे से विशेष पूजन अर्चन प्रारम्भ होगा। लगभग 2 घण्टे के पूजा के बाद पौने 12 से सवा 12 के बीच उसकी आधारशिला रखी जायेगी। रामलला के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास की माने तो यह दिन बहुत शुभ रहेगा।

शादी समारोह में शामिल होने आए दो युवकों की कुएं में गिरने से मौत

वाराणसी ब्यूरो : वाराणसी में कैंट थाना के फुलवरिया क्षेत्र में संगलवार सुबह करीब तीन बजे कुएं में गिरने से दो युवकों की मौत हो गई। पंडित दीनदयाल जिला अस्पताल में दोनों के शव को रखवाया गया है। फुलवरिया इमिलिया घाट गांव निवासी मोतीचंद के लड़के की बरात 22 मई को लहरतारा गई थी। बरात वापस 23 को आ गई और सोमवार को लड़के का रिशेप्सन था। इसी दिन मोतीचंद की लड़की की शादी भी थी। तय समय पर सोमवार की शाम बरात चंदौली के पूरागणेश, चकरा से आई थी। शादी में शामिल होने के लिए चंदौली के सकलडीहा के बलारपुर निवासी संतोष (38) और कटसिल निवासी रोहित (25) भी आए हुए थे। मोतीचंद के घर के पास ही कुएं में मंगलवार सुबह तीन बजे अचानक संतोष गिर गया। चीख पुकार सुनने के बाद उसे बचाने के लिए रोहित कुएं में उतरा लेकिन जहरीली गैस होने के कारण उसने दम तोड़ दिया। हादसे के बाद एक पल में ही शादी की खुशियां मातम में बदल गईं। सूचना पर कैंट इंस्पेक्टर अजय कुमार सिंह व चौकी प्रभारी कृष्ण मोहन पासवान ने फायर ब्रिगेड के जवानों व स्थानीय लोगों की मदद से दोनों के शवों को बाहर निकलवाया। हादसे की सूचना मिलते ही चंदौली से दोनों के परिजन रोते बिलखते हुए पहुंच गए। मृतक रोहित के भाई सुभाष ने पुलिस को घटना की लिखित सूचना दी है।

अतिक्रमण ने ली बाइक सवार की जान : ट्रक की चपेट में आने से मौत

सोनभद्र ब्यूरो : सोनभद्र में वाराणसी–शक्तिनगर हाइवे पर मधुपुर सब्जी मंडी के पास ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार की मौत हो गई। सर्विस लेन पर दुकान और वाहन खड़े होने से जाम के कारण बाइक सवार हाइवे पर जाकर आगे निकलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन ट्रक की चपेट में आ गया। ट्रक के पहिए के नीचे सिर कुचलने से मौके पर ही उसकी मौत

हो गई। बीच सड़क पर हादसे से कुछ देर तक आवागमन भी बाधित रहा। हादसे के बाद चालक ट्रक छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सदर कोतवाली क्षेत्र के बट्ट गांव निवास अरविंद कुमार (25) पुत्र रामप्यारे किसी काम से मधुपुर आ रहा था। सब्जी मंडी के पास सर्विस लेन जाम होने के कारण आगे जाने के लिए मुख्य मार्ग पर बने कट से घुसा। किनारे पर मंडी से संबंधित गाड़ियां खड़ी होने के कारण वह ही कट से घुसते हुए हाइवे पर बीच में आ गया। इसी बीच तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से उसकी मौत हो गई। स्थानीय लोगों का कहना है कि अतिक्रमण एवं ऑटो चालक के कब्जे के कारण सर्विस लेन जाम रहने के कारण ही यह हादसा हुआ।

अलीगढ़ में बिना लाइसेंस आबादी में तेजाब की बिक्री और भंडारण : गोदाम सीज

अलीगढ़ ब्यूरो : थाना देहलीगेट के शाहजमाल स्थित एडीए कॉलोनी में शहर के बीचों – बीच आबादी क्षेत्र में तेजाब का बड़े पैमाने पर भंडारण होता मिला। सिटी मजिस्ट्रेट प्रदीप वर्मा के नेतृत्व में सोमवार को पुलिस – प्रशासनिक एवं प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अफसरों की टीम ने छापेमारी करते हुए वहां से मिले तेजाब को जब्त कर लिया। उसी समय गोदाम को भी सीज

कर दिया गया। यहां से करीब दो लाख लीटर तेजाब बरामद हुआ है। प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार भंडारण में मानकों की अनदेखी की जा रही थी। किसी अनहोनी की स्थिति में वहां दमकल के पहुंचने तक का रास्ता तक नहीं है। शाहजमाल की एडीए कॉलोनी निवासी फरीद आबादी में तेजाब का भंडारण करने के साथ–साथ बिक्री कर रहे हैं। इसकी जांच को सिटी मजिस्ट्रेट प्रदीप वर्मा, सीओ प्रथम अशोक कुमार, प्रभारी निरीक्षक देहलीगेट प्रमेंद्र कुमार व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सहायक अवर अभियंता की टीम एडीए कॉलोनी में मेसर्स नासिर केमीकल गोदाम पर पहुंची। यहां जांच के बाद पता चला कि दो स्थानों पर तेजाब का भंडारण किया जा रहा था। संचालक यासीन टीम को मांगने पर लाइसेंस, भंडारण से जुड़े अभिलेख नहीं दिखा सके। सिटी मजिस्ट्रेट प्रदीप वर्मा ने बताया कि शासनादेश सात अप्रैल 2017 और सुप्रीम कोर्ट के सात दिसंबर 2015 को पारित आदेशों की अवहेलना की जा रही थी। एसिड अटैक की बढ़ती घटनाओं को लेकर सुप्रीम कोर्ट के आदेशों में साफ है कि तेजाब की बिना लाइसेंस के कहीं भी बिक्री नहीं होगी। खासकर आबादी क्षेत्र में इसका भंडारण भी नहीं किया जा सकता। उन्होंने बताया कि मौके से दोनों गोदाम से करीब दो लाख लीटर तेजाब बरामद हुआ है। इसे जब्त करने के साथ ही नोटिस तामील कराकर गोदाम को सीज कर दिया गया है। इस प्रकरण में नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है।

सूत्र के मुताबिक बैंककर्मी ने वीडियो बनाकर किया वायरल फिर दी जान

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जिले के इनायतनगर थाना क्षेत्र के अंतर्गत बैंक आफ बड़ौदा की कुचेरा शाखा में तैनात एक बैंक कर्मी ने आत्महत्या कर ली।मृतक बैंक कर्मी मूल रूप से झांसी का रहने वाला बताया जा रहा है।वह यहां कोतवाली नगर अन्तर्गत उसरू स्थित अपने ससुराल में रह रहा था।आत्महत्या करने से पहले बैंक कर्मी द्वारा बनाया गया एक वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिसमें उसने आत्महत्या को मजबूर करने के लिए कुछ लोगों के नाम लिए हैं और कहा है उनको सजा मिले इस लिए वीडियो रेकार्ड कर रहा हूं। इसके साथ ही एक दूसरे वायरल वीडियो में परिवार से माफी भी मांगी है। बताया जाता है कि दोनों वीडियो उसने बैंक के आफिशियल वाट्सएप ग्रुप पर भी डाले हैं। दोनों वीडियो बैककर्मी ने कार में बनाए हैं।मिली जानकारी के अनुसार सोमवार को बैंक आफ बड़ौदा की कुचेरा शाखा के कर्मी दीपक यादव उसरू स्थित अपनी ससुराल में मृत पाया गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। आत्महत्या की पुष्टि उसके मोबाइल द्वारा बनाए गए वायरल वीडियो से होती है।इस संबंध में कोतवाल देवेंद्र सिंह का कहना है कि मोबाइल कब्जे में ले लिया गया है और वीडियो में जो भी कहा गया है उसके आधार पर जांच कराई जा रही है।बैंक कर्मी ने आत्महत्या किन कारणों से कई इसकी जानकारी अभी नहीं हो सकी है लेकिन हाल ही में उसका तबादला भी हुआ था। वहीं एक सड़क के किनारे कार में बैठ कर बनाए गए दोनों वीडियो एक बड़े साक्ष्य के रूप में पुलिस के हाथ लगे हैं। पहले एक मिनट 17 सेकेंड के वीडियो में वह खुद को गहरी साजिश का शिकार बता रहा है और बैंक की एक महिला कर्मी समेत कई लोगों के नाम लेकर यह कहता दिख रहा है कि मैं यह मैसेज रेकार्ड कर रहा हूं, क्योंकि अब जो कदम उठाने जा रहा हूं उसका जिम्मेदार कौन है यह लोग जान लें।वहीं दूसरे 2 मिनट 50 सेकेंड के वीडियो में बैंक कर्मी परिवार से माफी मांग रहा है। बोल रहा है मैं आखिरी वीडियो बना रहा हूं तुम सबसे माफी मांगने के लिए। परिवार को सम्बोधित वीडियो में कहा कि मेरी वजह से जो समस्याएं हैं दिक्कतें हैं वह खत्म हो जायेगी।मेरी वजह से बहुत परेशानी हुई, कभी सुख नहीं दिया।इस वीडियो में यह भी कह रहा हैं कि एक ऐसा गड्ढा खोद लिया खुद जिससे बाहर आना मुश्किल है।दोनों वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने नाम लिए गए बैंक कर्मी और अन्य की तलाश के प्रयास शुरू कर दिए हैं। कोतवाल का कहना है कि शीघ्र पूरी जानकारी सामने आ जायेगी। उन्होंने कहा कि जहर खाकर या कैसे आत्महत्या की यह पोस्टमार्टम रिपोर्ट से साबित होगा।

नाबालिग बोला– मौलवी ने बंद कमरे में किया धर्मांतरण : फिर दो बच्चों की मां से जबरन कराया निकाह

कानपुर ब्यूरो : कानपुर के काकादेव में सोमवार देर शाम एक परिवार ने मौलवी व उसके साथियों पर नाबालिग का धर्मांतरण करवाकर निकाह कराने का आरोप लगाया। उन्होंने बताया कि जिससे जबरन निकाह कराया गया है वह महिला दो बच्चों की मां है। कुछ ही देर में बजरंग दल के कार्यकर्ता थाने में जुट गए और जमकर हंगामा किया। पीड़ित परिवार ने थाने में तहरीर दी। पुलिस ने जांच कर कार्रवाई का आश्वासन देकर उन्हें शांत कराया। दंपती ने बताया कि उनके 16 वर्षीय बेटे को एक मौलवी और उसके साथी पकड़ ले गए। आरोप है कि बंद कमरे में नाबालिग का धर्मांतरण कराया। इसके बाद एक महिला से उसका निकाह करवा दिया। देर शाम जब नाबालिग घर पहुंचा तो उसने आपबीती परिजनों को सुनाई। परिजन और बजरंग दल के कार्यकर्ता सोमवार शाम करीब सात बजे काकादेव थाने पहुंचे। परिजनों ने मौलवी व उसके साथियों के खिलाफ तहरीर दी। वहीं, बजरंग दल के

कार्यकर्ताओं ने करीब दो घंटे तक नारेबाजी की। डीसीपी पश्चिम बीबीजीटीएस मूर्ति ने बताया कि मामले में गहनता से छानबीन की जा रही है। इस दौरान मामले की जांच में जुटी पुलिस ने मौलाना सहित चार को हिरासत में ले लिया है। आरोपियों में सिमरन, जमीला बानो, मोहम्मद हनीफ और मौलवी तौहीद हुसैन शामिल हैं।

आंधी–बारिश व बिजली गिरने से तीन लोगों की मौत

अलीगढ़ ब्यूरो : अतरौली तहसील के गांव दीनापुर निवासी 12वीं कक्षा के छात्र राहुल मिश्रा (18) पुत्र धनीराम मिश्रा सोमवार की सुबह करीब 9.30 बजे अपनी मां व मजदूरों के साथ खेत में गन्ने की फसल में निराई कर रहे थे। इसी बीच तेज बारिश शुरू हो गई। बारिश से बचने के लिए अपनी मां व मजदूरों के साथ राहुल पास ही एक खेत में अपनी बुर्जी की छान के नीचे बैठ गए, जबकि उनकी मां व मजदूर दूसरी ओर बनी झोपड़ी में जाकर बैठ गए। इसी बीच तेज आवाज के साथ बुर्जी पर बिजली गिरी से राहुल मिश्रा की मौत हो गई, जबकि बुर्जी और भूसे में आग लग गई। बिजली गिरने की तेज आवाज पर राहुल की मां व अन्य लोग तत्काल बुर्जी के पास दौड़कर पहुंचे तो वहां राहुल का जला हुआ शव पड़ा मिला। इस पर उसकी मां समेत अन्य लोगों की चीख निकल गई। तहसीलदार उदयवीर सिंह ने बताया कि घटना की जानकारी मिली है। जांच कराई जा रही है। दैवीय आपदा के तहत शासन स्तर से जो भी नियम है उसके तहत पीड़ित परिवार को जल्द मदद मुहैया कराई जाएगी। बारिश से पैदा हुई ठंड से एक व्यक्ति की मौत शनिवार की देर रात तेज हवाओं के बीच बारिश से बढ़ी ठंड के चलते गांव ककौला में एक घर के पास बरामदे में टाट की बोरी ओढ़कर सोए व्यक्ति की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। गांव मोहकमपुर दुनाई निवासी 52 वर्षीय वीरपाल सिंह पुत्र मेघ सिंह फेरी लगाकर नील बेचते थे। शनिवार को दूसरे गांवों में पैदल ही नील बेचते हुए शाम में ककौला गांव पहुंच गए। वहां थकने पर रामनिवास के मकान के पास एक बरामदे में आराम करने के लिए रुक गए। रात में आंधी व बारिश शुरू हो गई तो अपने गांव नहीं लौट सके। उधर बारिश और हवाओं से ठंड लगी तो टाट की पड़ी बोरी को ओढ़कर सो गए। सोमवार को एक ग्रामीण की नजर

टाट की बोरी ओढ़कर सोए वीरपाल पर पड़ी तो उन्होंने लोगों को आवाज देकर बुलाया। इस पर भीड़ लग गई। लोगों ने टाट की बोरी हटाकर देख तो वीरपाल का शव पड़ा था। सूचना पर पुलिस पहुंच गई। पहचान होने पर पुलिस ने परिवार वालों को खबर देकर बुला लिया, जिसके बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। पलाचांद गांव में आंधी–बारिश से गिरी दीवार, महिला की मौत रविवार की रात गांव पलाचांद में आंधी–बारिश के बीच एक मकान की निर्माणाधीन दीवार गिर गई। इससे एक महिला की जान चली गई। वहीं आंधी से बिजली के खंभे व तार टूट गए जिससे बिजली भी गुल रही। गांव पलाचांद निवासी किशन सिंह मजदूरी करते हैं। रविवार की रात करीब दस बजे उनकी पत्नी ओमवती (48) खेतों से शौच कर अपने घर लौट रही थीं। रास्ते में आंधी–बारिश के बीच एक निर्माणाधीन मकान की दीवार उनके ऊपर गिर पड़ी। दीवार के मलबे में दबने से उनकी मौत हो गई। वह अपने पीछे पति, दो पुत्र व एक पुत्री को रोता–बिलखता छोड़ गई हैं। परिवार वालों ने शव का पोस्टमार्टम नहीं कराया। सूचना पर लेखपाल एकता सारस्वत ने पहुंचकर जांच की।

पति की हत्या में पत्नी–प्रेमी सहित चारों को भेजा जेल

अलीगढ़ ब्यूरो : सासनी गेट क्षेत्र के मोहल्ला कबीर नगर पला साहिबाबाद में फैक्टरी मजदूर की हत्या में गिरफ्तार उसकी पत्नी, प्रेमी सहित चारों आरोपी सोमवार को जेल भेज दिए गए। इसके अलावा पुलिस ने हत्या कर शव फेंके जाने में प्रयुक्त की गई टिर्री को भी बरामद कर लिया है। बता दें कि 26 वर्षीय चेतन ने तीन साल पहले इलाके की ही नेहा से प्रेम विवाह किया था। चेतन मोहल्ले में ही एक फैक्टरी में मजदूरी करता था। उसी फैक्टरी के स्वामी से नेहा के प्रेम संबंधों में तीन दिन पहले चेतन की हत्या कर दी गई। इस मामले में पुलिस ने नेहा, फैक्टरी स्वामी दीपक व दो अन्य पिंटू व रवि को गिरफ्तार कर लिया था। इंस्पेक्टर सासनी गेट पंकज मिश्रा के अनुसार गिरफ्तार चारों

आरोपियों को जेल भेज दिया है। इस हत्या में प्रयुक्त टिर्री भी बरामद कर ली गई। बाकी मामले में जांच चल रही है। अन्य लोगों को लेकर सुराग जुटाए जा रहे हैं।

देसी व अंग्रेजी शराब ठेकों से डेढ़ लाख रुपये की लूट

अलीगढ़ ब्यूरो : सोमवार की रात करीब आठ बजे थाना क्षेत्र के साधु आश्रम और बुढ़ासी में हथियार बंद नकाबपोश बदमाशों ने देसी और अंग्रेजी शराब के ठेकों पर फायरिंग करते हुए करीब डेढ़ लाख रुपये लूट लिए। लूटपाट कर बदमाश पनैठी की ओर भाग निकले। देर रात तक पुलिस बदमाशों का पीछा करने का दावा कर रही थी। सूचना पाकर पहुंचे सीओ अतरौली ने शराब ठेकों के सेल्समैन से घटना की जानकारी ली। साधु आश्रम पर विनीत अग्निहोत्री का अंग्रेजी शराब का ठेका है। उनके एक ओर बीयर तो दूसरी ओर देसी शराब का ठेका मौजूद है। विनीत अग्निहोत्री के अंग्रेजी शराब के ठेके पर राजीव कुमार सेल्समैन हैं। सोमवार की रात लगभग आठ बजकर 22 मिनट पर तीन नकाबपोश बदमाश कासिमपुर रोड की ओर से हाथों में तमंचे लेकर आ धमके तथा फायरिंग कर भय पैदा कर दिया। फायरिंग होने पर आसपास के कुछ दुकानदारों ने शटर गिरा लिए तो कुछ भाग गए। इस बीच बदमाशों ने अंग्रेजी शराब के सेल्समैन राजीव कुमार को धमकाते हुए दुकान की छत पर फायर झोंक दिया जिसके बाद सेल्समैन डरकर भाग गया। बदमाशों ने ठेके के गल्ले में रखे लगभग 70–75 हजार रुपये लूट लिए। इसके बाद बदमाश बीयर के ठेके पर पहुंचे जहां सेल्समैन प्रकाश चंद शर्मा को तमंचे दिखाकर ललकारा और गेट खोलने के लिए कहा लेकिन फायरिंग की आवाज सुनकर वह पहले ही सतर्क होकर फ्रिज के पीछे छिप गए थे, जिस पर बदमाश वहां से बुढांसी की ओर भाग गए। पीड़ित सेल्समैन राजीव कुमार की शिकायत पर पुलिस जब तक बदमाशों की घेराबंदी करती तब तक इन्हीं बदमाशों ने महज 22 मिनट के अंतराल पर माछुआ और बुढ़ासी के बीच स्थित देसी शराब के ठेके पर हवाई फायरिंग करते हुए सेल्समैन प्रदीप को बाहर भगा दिया और गल्ले में रखे 70–80 हजार रुपये लूटकर पनैठी की और भाग गए। वहीं थाना पुलिस का कहना था कि एक टीम बदमाशों के पीछे लगी हुई है। तीन बदमाशों ने दिया दोनों घटनाओं को अंजाम साधु आश्रम और बुढ़ासी में हुई दोनों ही घटनाएं सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गईं। दोनों ही घटनाओं में तीन बदमाश घटनाओं को अंजाम देते दिखाई दे रहे हैं, जबकि बुढांसी के ठेके के सेल्समैन प्रदीप का कहना है कि बदमाशों की संख्या लगभग 8 से 10 के बीच थी, जो कि दो कार और दो बाइकों पर वहां पहुंचे। इससे माना जा रहा है कि बाकी के बदमाश अपने तीन साथियों को कवर करने में लगे हुए थे। किसी प्रकार के विरोध ा या घेराबंदी होने पर वह साथियों की मदद कर उन्हें छुड़ा ले जाते। यही कारण था कि साधु आश्रम पर पैदल पहुंचे बदमाश लूट के बाद पैदल ही रामघाट रोड को पार कर बुढांसी रोड पर भागे जहां पहले से मौजूद अपने साथियों के साथ आगे की ओर बढ़ गए। – तीन बदमाशों ने दोनों घटनाओं को अंजाम दिया है। घटना के समय अधिकांश दुकानदार चले जाते हैं, जिससे बदमाशों ने आसानी से वारदात को अंजाम दिया। इस संबंध में अभी तहरीर नहीं मिली है, लेकिन पुलिस टीम हर पहलु पर जांच पड़ताल में जुटी हुई है। – शिव प्रताप सिंह, क्षेत्राधिकारी अतरौली।

ग्राम प्रधान पर हमला करना पड़ा महंगा : 6 लोगों के विरुद्ध गम्भीर धाराओं में मुकदमा दर्ज

अयोध्या।(अमित कुमार मणि त्रिपाठी संवाददाता) जिले के पटरंगा थाना क्षेत्र के ग्राम पचलो में ग्राम प्रधान पर हमला करना दबंगों को महंगा पर गया, वहीं ग्राम प्रधान की तहरीर पर 6 लोगों पर गम्भीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर दिया गया।सूत्र के मुताबिक ग्राम प्रधान पचलो इस्तिखार अहमद ने बताया कि शुक्रवार को गांव के कुछ लोग सरकारी जमीन में नींव खोद रहे थे।इसकी शिकायत डायल 112 पर की गई।डायल 112 के पुलिस कर्मियों ने सरकारी जमीन पर नींव खोद रहे लोगों से काम रुकवा दिया।शनिवार को वही लोग फिर नींव खोदने लगे।ग्राम प्रधान ने जब मना किया तो नींव खोद रहे लोगों ने प्रधान इस्तिखार अहमद पर लाठी डण्डों से हमला कर दिया।ग्राम प्रधान जब अपनी जान बचा कर घर के अंदर घुस गये तो दबंगों ने घर मे भी घुस कर पिटाई कर दी तथा घर मे रखे समान को भी तोड़ डाला।ग्राम प्रधान ने पटरंगा थाना पहुँच कर नामजद तहरीर दी।थाना प्रभारी पटरंगा विवेक कुमार सिंह ने बताया कि ग्राम प्रधान इस्तिखार अहमद की तहरीर पर हफीजुर्रहमान,दोस्त मोहम्मद,सहिला बानों,दानिशा सहित 6 लोगों के विरुद्ध धारा 147, 323, 504, 506, 427, 332, 452 के तहत मुकदमा दर्ज कर दिया गया है।

रुदौली में ईद मिलन समारोह का हुआ आयोजन

अयोध्या।(डा.आलोक श्रीवास्तव अयोध्या संवाददाता) जिले के रुदौली विधान सभा क्षेत्र के वरिष्ठ समाजवादी पार्टी नेता एहसान मो.अली उर्फ चौधरी शहरयार द्वारा ईद मिलन का आयोजन किया गया जिसमें अयोध्या व बाराबंकी जिले के दिग्गज सपायों का जमावड़ा रहा। आपसी सौहार्द व गंगा जामुनी तहजीब को बढ़ावा देने के उद्देश से आयोजित इस कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।इस मौके पर अतिथियों ने कहा कि रुदौली की गंगा जामुनी तहजीब ऐतिहासिक रही है जहां हर वर्ग सभी पर्वों को मिल कर मनाते हैं। इस अवसर पर विधायक अवधेश प्रसाद,पूर्व मंत्री अरविंद कुमार सिंह गोप,पूर्व मंत्री आनंद सेन यादव ,जैदपुर विधायक गौरव रावत पूर्व विधायक राम गोपाल रावत,सहित अयोध्या जिला अध्यक्ष गंगा सिंह यादव,बाराबंकी जिला अध्यक्ष हाफिज अयाज ,जिला महासचिव बखष्तियार खान, चौयरमैन रुदौली जब्बार अली ,पूर्व ब्लॉक प्रमुख कुर्सी चौधरी तालिब नजीब,युवजन सभा जिला अध्यक्ष जय सिंह यादव,पूर्व ब्लॉक प्रमुख निशात खां, विधान सभा अध्यक्ष छोटे लाल यादव,एडवोकेट आबाद खां, वरिष्ठ नेता फराज किदवई,प्रो.अवधेश यादव, मो.आरिफ, जिला पंचायत सदस्य मो.अली,रईस खां, पूर्व जिला पंचायत सदस्य मुन्ने खां,दरगाह शरीफ के शाह मंसूर अहमद,जहीर खान,विनोद लोधी,सभासद मो.इद्रीस,सभासद प्रदीप यादव,दरगाह शरीफ के शाह मंसूर अहमद,शुएब खां,नगर अध्यक्ष मो.आमिर खान,कफील खां,परवेज अहमद खां,अखघ्लाक राजा,राजित राम रावत,हुमायूँ नईम खां,प्रधान सरफराज खां,शाह यासिर सहित सैकड़ों की तादाद में क्षेत्रीय जनता मौजूद रही।

सड़क दुरुस्त कराने व ट्रैफिक पुलिस की तैनाती की मांग जिला अधिकारी से

अयोध्या।(डा.अजय तिवारी जिला संवाददाता)इस समर नगर मे यातायात सम्बंधी विभिन्न समस्याओं के निराकरण के लिए जिलाधिकारी को व्यापार अधिकार मंच रुदौली के अध्यक्ष हाजी अमानत अली ने मांगपत्र दिया है।हाजी अमानत द्वारा दिये गये मांगपत्र में उन्होंने लिखा है कि रुदौली से अमानीगंज जाने वाला मार्ग काफी दयनीय स्थित में हो गया है।सड़कों पर जगह–जगह अनगिनत जानलेवा बड़े बड़े गड्ढे होने की वजह से वाहन चालको को काफी परेशानियो का सामना करना पड़ता है।रूदौली नगर के कटरा व नवाब बाजार तिराहे की मुख्य सड़को पर हमेशा जाम लगा रहता है जिस कारण लोग इलाज के लिए सीएचसी,रूदौली तहसील व रेलवे स्टेशन समय पर नही पहुच पाते हैं।इन दोनों तिराहों पर ट्रैफिक पुलिस की तैनाती किए जाने की मांग की है।इसके साथ ही उन्होंने कहा है कि नयागंज ऐहार मार्ग की हालत काफी दयनीय होने के कारण राहगीरों का चलना काफी मुश्किल है।श्री अली ने जिलाधिकारी से इस खस्ताहाल व जर्जर सड़क को दुरुस्त कराने के साथ साथ इस सड़क को चौड़ीकरण कराए जाने की मांग की है।

यूपी में सभी परिवारों का बनेगा आधार जैसा कार्ड

अयोध्या।(डा.आलोक श्रीवास्तव अयोध्या संवाददाता) उत्तर प्रदेश की योगी सरकार सभी परिवारों को अब यूनिक आईडी कार्ड देने जा रही है। 'परिवार कल्याण कार्ड' से प्रदेश के सभी परिवारों को जोड़ने की योजना तैयार की गई है। 12 अंकों वाले कार्ड से सरकारी योजनाओं को जोड़ा जाएगा।किस परिवार को किस योजना का लाभ मिल रहा है या नहीं मिल रहा है, यह पता लगाने में इससे आसानी होगी।इकनॉमिक टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, सीएम योगी आदित्यनाथ के सामने पिछले सप्ताह एक प्रजेंटेशन दी गई है, जिसमें इसका पूरा ब्यौरा पेश किया गया। फैमिली कार्ड के लिए राशन कार्ड के डेटा को आधार बनाया जाएगा। सरकारी सूत्रों ने कहा, ''यदि हम राशन कार्ड को आधारा बनाते हैं, तो कुछ ही दिनों में 60 फीसदी परिवार इससे जुड़ जाएंगे।''प्रयागराज में इसे पायलट प्रॉजेक्ट के तौर पर लागू किया गया था। कार्ड कार्ड डेटा के आधार पर सरकार ने लाभार्थी परिवारों की पहचान की। इसने सरकार को यह भी डेटा उपलब्ध कराया कि किन परिवारों को सरकार की किसी योजना का लाभ नहीं मिल रहा है। सरकारी अधिकारियों का मानना है कि इस कार्ड से फर्जी कार्डों पर रोक लगेगी और एक ही परिवार को बार–बार किसी योजना का लाभ मिलना बंद होगा। उन परिवारों को योजनाओं का लाभ मिलेगा, जो अभी तक वंचित रहे।2022 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने सत्ता में आने पर हर परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने का वादा किया था। फैमिली कार्ड के जरिए सरकार यह तय कर पाएगी कि किस परिवार को रोजगार मिल गया है और किस परिवार के किसी सदस्य के पास रोजगार नहीं मिला है।

सड़क सुरक्षा नियमों का दैनिक जीवन में पालन करें: नृपेंद्र वर्मा

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : उत्तर प्रदेश शासन के निर्देश के क्रम में सड़क सुरक्षा अभियान वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ.निर्मला एस. मौर्य के संरक्षकत्व में चलाया जा रहा है। उक्त अभियान के अंतर्गत प्रशिक्षण, जागरूकता, वाल राइटिंग, प्रश्नोत्तरी, सुरक्षा शपथ आदि कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं । सड़क सुरक्षा अभियान के अंतर्गत आज विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा जागरूकता रैली निकालकर वृहद हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। जागरूकता रैली का शुभारंभ कुलसचिव महेंद्र कुमार ने किया। इसके बाद अपराह्न 1:30 बजे एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी विषयक 'सड़क सुरक्षा में जन–भागीदारी' का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि श्री नृपेंद्र वर्मा, जोनल ऑफिसर, स्पेशल ब्रांच, उत्तर प्रदेश पुलिस, वाराणसी रहे। उन्होंने बताया कि भारत एक ऐसा देश है जहां सुरक्षा की सबसे ज्यादा आवश्यकता अगर कहीं महसूस होती है तो वह सड़कों पर होती है, इसलिए सड़कों पर नियमित गति के साथ स्वयं व दूसरों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर ही चलना चाहिए । इसे ध्यान में रखते हुए ही मुख्यमंत्री का ऐसा संकल्प है कि अगर सरकार और समाज दोनों मिलकर संगठित प्रयास करें तो सड़क दुर्घटनाओं में निश्चित ही कमी आ सकेगी। उन्होंने सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों व अभिभावकों से निवेदन किया की सड़क सुरक्षा, ट्रैफिक के नियमों एवं बचाव के नियमों का हमें दैनिक जीवन में दृढ़ता से पालन करना चाहिए। यह वेबीनार सड़क सुरक्षा क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। वेबीनार का संचालन डॉ. शशिकांत यादव ने किया, अतिथि परिचय एवं भाव भूमिका डॉ. श्याम कन्हैया सिंह के द्वारा की गई एवं धन्यवाद ज्ञापन रज्जू भैया संस्थान के निदेशक डॉ. देवराज सिंह ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी और अभिभावक उपस्थित रहे रहे।

किसान यूनियन का 17 सूत्रीय ज्वलंत समस्याओं को लेकर एक महीना से अधिक दिन से अनवरत धरना जारी

अयोध्या।(डा.अजय तिवारी जिला संवाददाता) कोतवाली नगर के सदर तहसील के सामने तिकोनिया पार्क मैं 17 सूत्रीय ज्वलंत समस्याओं को लेकर एक महीना से अधिक अनवरत धरना चल रहा था जिसमें बीच–बीच में प्रशासन से वार्तालाप कर कुछ समस्याओं का निदान होता रहा इसमें किसान यूनियन के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं द्वारा सोमवार को महापंचायत का ऐलान किया जिसमें सैकड़ों की संख्या में किसान इकट्ठा होकर प्रशासन से 4:00 वार्तालाप करने का आश्वासन मिला लेकिन समय के अनुसार अधिकारी ना आने के कारण किसान उग्र हो गए और किसान विरोधी नारा लगाते हुए सदर तहसील सामने रोड जाम कर दिया तब जाकर शासन प्रशासन पहुंच कर किसानों से वार्ता के लिए मजबूर हुए पंचायत में एडीएम प्रशासन अमित कुमार सिंह पहुंच कर किसानों की समस्या सुनी और बची हुई समस्या का 1 हफ्ते मैं निस्तारण करने का आश्वासन दिया और साथ में एसपी सिटी विजय पाल सिंह द्वारा आश्वासन दिया गया कि पुलिस की समस्याओं को जल्द से जल्द निस्तारण कर दिया जाएगा।पंचायत में प्रमुख रूप से,प्रदेश सचिव,दिनेश कुमार दुबे,मंडल प्रमुख महासचिव,श्री राम वर्मा,जिला प्रवक्ता,फरीद अहमद, नगर अध्यक्ष अजय यादव जिला सचिव मोहम्मद सईम(शेरू) डॉक्टर रामजन्म यादव राजेंद्र वर्मा राजू निषाद, केशव देवी निर्मला धरमशिला सोनी मालती मोरिया शांति देवी आज सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पत्रकार एकता संघ का सातवा वां स्थापना दिवस समारोह आनंद भवन वृद्धाश्रम पर सम्पन्न

सुल्तानपुर(अमित श्रीवास्तव क्राइम ब्यूरो सुल्तानपुर) जिले में पत्रकार एकता संघ का सातवा वां स्थापना दिवस समारोह आनंद भवन वृद्धाश्रम पर सम्पन्न हुआ।इस मौके पर आनंद भवन वृद्धाश्रम में माता पिता तुल्य बुजुर्गों के बीच उनको दैनिक उपयोग की आवश्यक सामग्री प्रदान कर मनाया गया।इस कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात प्रदेश उपाध्यक्ष के अनुज सुपुत्र तथा सडक हादसे में दुर्घटना में दिवंगत हुए लालगंज प्रतापगढ़ के साथी रहे अजय शंकर मिश्र जी की प्रतिमा पर पुष्प व माला चढाकर तथा एक मिनट का मौन करते हुए ईश्वर से सभी पत्रकार साथियों ने तथा वृद्धाश्रम के पिता व माता तुल्य बुजुर्गों ने ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की तथा विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित किया।इसी कड़ी में पत्रकार एकता संघ के स्थापना की चर्चा करते हुए विगत वर्षों में पत्रकार हितों के लिए किये गये संघर्षों की चर्चा भी की गयी! अयोध्या मण्डल व जनपद सुलतानपुर के पदाधिकारी साथी मौजूद रहे! लगभग 60 वृद्धजनों को दैनिक उपयोगी वस्तुएं प्रदान कर स्थापना दिवस सम्पन्न किया गया! उक्त अवसर पर जिला सचिव सिराज खान अपने संबोधन के माध्यम से बताया कि पत्रकार एक समाज का दर्पण है हम सब निष्पक्ष पत्रकारिता के साथ संगठित रहने का संकल्प लिया।वही एम. एच. खान गौरी जिला विधिक सलाहकार ने कहा कि पत्रकार समाज सेवी होता है और अधिवक्ता होने के नाते वृद्ध व निर्बलजनों को निशुल्क परामर्श देता रहूंगा। मण्डल अध्यक्ष अलीमुद्दीन ने बताया की हम स्थापना दिवस के अवसर पर एक पुनीत कार्य के साथ अपने संगठन के ढांचा को मजबूत कर सभी पत्रकार साथियों के सुख दुख में साथ रहकर समाज सेवा करने पर बल दिया। जिलाध्यक्ष बाल

गोविन्द मौर्य ने कहा कि हम निर्भीक पत्रकारिता के साथ एक संगठित पत्रकारिता के क्षेत्र में जनपद सुल्तानपुर में अपनी पहचान बनाएंगे इस मौके पर कई वक्ताओं ने मंच को सम्बोधित किया उपस्थित बुजुर्ग जनों के लिए मानवीय जीवन से जुडी अनेक बातों को वक्ताओं ने रखा तथा समाज की सेवा से जुडे कार्यों को जीवन की सफलता का मूलमंत्र भी बताया!इस मौके पर मंच का संचालन ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह वरिष्ठ मण्डल उपाध्यक्ष अयोध्या ने किया!उक्त अवसर पर जिला सचिव, आलोक श्रीवास्तव, मण्डल महामंत्री शफीक, मण्डल उपाध्यक्ष राशिद खान, जिला महामंत्री डॉ शमीम खान व शिव प्रकाश जायसवाल, जिला सचिव अमित श्रीवास्तव, जिला सचिव अभिषेक विश्वकर्मा, रवि प्रकाश, संदीप कुमार,मो. जुनेद राइन, मेहदी हसन जिलामंत्री, संजय कसौधन, मो. जमील भाई जिला सचिव आदि पदाधिकारी व साथीगण तथा आनंद भवन वृद्धाश्रम के प्रबन्धक श्रवण कुमार शर्मा पत्रकार एकता संघ के स्थापना दिवस एक मार्मिक प्रेरणादायक प्रयास की सराहना की अपने दिगंत पत्रकार साथी के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए स्थापना दिवस कार्यक्रम सम्पन्न हुआ!

गांव में पहली बार लगा खड़ंजा : ग्रामीणों ने जतायी खुशी

अयोध्या।(सरवन कुमार नगर संवाददाता) जिले के हैरिंग्टनगंज ब्लॉक के ग्राम रेवना के छोटका तुलापुर मजरे में खड़ंजा मार्ग बनने पर ग्रामीणों ने मिल्कीपुर के पूर्व विधायक गोरखनाथ बाबा के प्रयास के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए खुशी जतायी है।मिल्कीपुर विधानसभा के हैरिंग्टनगंज ब्लॉक क्षेत्र के ग्राम पंचायत रेवना पूरे छोटका तुलापुर में अभीतक विकास की किरण नहीं पहुंची। लगभग 15 परिवारों वाले इस मजरे तक जाने के लिए आजादी के बाद से आज तक खड़ंजा मार्ग भी नसीब नहीं हुआ था। लोगों ने बताया कि जरा सी बारिश हो जाने के बाद यह मजरा पूरी तरह से कट जाता है। पिछले दिनों मिल्कीपुर के तत्कालीन विधायक गोरखनाथ बाबा के प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री त्वरित योजना के तहत ग्रामवासियों को 500 मीटर खड़ंजा मार्ग स्वीकृत हुआ था। जो सोमवार को बनकर तैयार हो गया। ग्रामवासी रजनीश पाण्डेय ने बताया कि उक्त खड़ंजा मार्ग लगने में हम गांव वालों को राजनैतिक विरोध भी झेलना पड़ा। उन्होंने बताया कि पूर्व विधायक गोरखनाथ बाबा के केदारनाथ धाम यात्रा में होने के नाते खड़ंजा लगवाने में आयी बाधा को भाजपा नेता सरयू प्रसाद दुबे, देवेंद्र मणि, महेश ओझा ने गतिरोध खत्म करवाकर खड़ंजा मार्ग बनवा दिया। ग्रामवासी सुरेश पाण्डेय, कामाख्या पाण्डेय, संतोष तिवारी, लक्ष्मीकांत मिश्र, पप्पू मिश्रा, अरविन्द, राम सागर, राहुल पाण्डेय, रोहित सहित अन्य ग्रामीणों ने खड़ंजा मार्ग के निर्माण पर खुशी जतायी है।

राजस्व लेखपाल का बड़ा खेल बिना आदेश के बना दी खतौनी मण्डलायुक्त ने दिये जाँच के दिशा निर्देश

अयोध्या।(अमित कुमार मणि त्रिपाठी संवाददाता) राजस्व लेखपाल के आगे जिला प्रशासन बौना साबित हो रहा है।बिना अधिकारी के आदेश पर पत्रावली में आदेश चढ़ाकर तहसील सदर की राजस्व लेखपाल द्वारा बड़ा खेल किया गया है।सूत्र के मुताबिक पूर्व में माझाबरेटा में रहे लेखपाल विजय प्रकाश शुक्ला के खिलाफ मंडलायुक्त ने जांच का आदेश कर कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश जिलाधिकारी को दिया था। जिसकी जांच ए आर ओ के स्तर पर लंबित है ।अभी तक किसी तरह की जांच अधिकारी द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई है ।जबकि उपरोक्त लेखपाल कुछ ही माह में सेवानिवृत्त होने वाला है उपरोक्त घोटाले ने लेखपाल को जीवन दान देने के चक्कर में अधिकारी ढुलमुल रवैया अपना रहे हैं ।जबकि शिकायतकर्ता के खाते में किया गया अंकन पूर्ण रूप से फर्जी पाया गया और ए आर ओ महोदय ने इसे निरस्त करके पुनः शिकायतकर्ता रमापति पाण्डेय का नाम दर्ज करा दिया है। परंतु भ्रष्टाचार की कार्रवाई में लिप्त लेखपाल विजय प्रकाश शुक्ला के खिलाफ अभी तक किसी तरह की कोई कार्यवाही नहीं हुई है जबकि यह तो बानगी मात्र है। इस तरह के तहसील सदर में ढेर सारे प्रकरण हैं इनकी जांच होने पर कई लोगों की गर्दन फंस सकती हैऔर की जमीन घोटाले मे नकाब हो सकते है।

रास्ते का अभाव बना हरिंग्टनगंज ब्लाक के उरुवा वैश्य गांव

अयोध्या।(सरवन कुमार नगर संवाददाता)जिले के हरिंग्टनगंज ब्लाक के उरुवा वैश्य गांव आवागमन के लिए दुरुस्त मार्ग नहीं है और न ही जल निकासी का कोई इंतजाम है। जर्जर खड़ंजों पर बड़े–बड़े गड्ढे हो गए हैं। नालिंया बनी नहीं है। जहां बनी हैं वहां पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। गंदे पानी और कीचड़ से बजबजा रही हैं। पगडंडियों पर भी जलभराव है। सफाई के अभाव में जगह–जगह गंदगी के ढेर लगे हैं। गांव में स्ट्रीट लाइटें नहीं लगी हैं। नव निर्मित पंचायत भवन और सामुदायिक शौचालय भवन हैंड ओवर होने के बाद भी अधूरे पड़े हैं। शौचालय के खुले गड्ढे व बिजली वायरिंग के लटके तार विकास कार्य में बरती गई ईमानदारी की कहानी बंया कर रहे हैं। पंचायत भवन व सामुदायिक शौचालय सहित प्राथमिक विद्यालय डड़वा तक जाने के लिए कायदे का मार्ग तक नहीं है। यह हाल है हैरिंग्टनगंज ब्लॉक के उरुवा वैश्य गांव का। जहां दशकों से बुनियादी सुविधाओं के लिए लोग तरस रहे हैं। तकरीबन 60 साल पहले इस गांव को ग्राम पंचायत का दर्जा दिया गया। यहां उरुवा वैश्य, जमोलिया, कहोली मिश्र का पुरवा, घेराऊ मिश्र का पुरवा, सिद्धि पाठक का पुरवा, महोलिया, डड़वा, भिच्छू का पुरवा, भैदीसराय, उदई तिवारी का पुरवा, जोखन तिवारी का पुरवा, ब्लाक मोड़ व लाला का पुरवा सहित 14 मजरे हैं। इस गांव की आबादी लगभग ढाई हजार से अधिक है। गांव में एक साधन सहकारी समिति है। एक आंगनबाड़ी केंद्र है। दो राजकीय नलकूप हैं। जिसमें महोलिया में स्थित राजकीय नलकूप बंद पड़ा है। यह गांव हैरिंग्टनगंज बाजार से लगा हुआ है। पक्के मार्ग से केवल मुख्य गांव व जमोलिया का जुड़ाव है। शेष मजरों में जाने के लिए ठीकठाक रास्ते नहीं हैं।

महंत विष्णु दास ने गौशालाओ में सीसीटीवी लगाने की उठाई मांग

अयोध्या(संवाददाता) सुरेंद्र कुमार।अयोध्या के सिद्ध पीठ हनुमानगढ़ी पट्टी के महंत विष्णु दास संत ने प्रदेश के सभी गौशालाओं की निगरानी हेतु गौशालाओ में सीसीटीवी कैमरा लगवाने की उठाई मांग सिद्धपीठ हनुमानगढ़ी के महंत विष्णुदास महाराज ने पीएम मोदी व सीएम योगी से सभी गौशालाओ की निगरानी हेतु स्थान पर सीसीटीवी कैमरा लगाये व स्वयं उसकी निगरानी करें। ऐसे में अगर गायो की हत्या या उनके साथ कुछ भी होता है तो उसके जिम्मेदारी स्वयं सरकार की होगी।

राम नगरी अयोध्या में टैंपो स्टैंडों की कमाई करोड़ों में सुविधा सिफर – मनोज प्रजापति

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या,)राम नारी अयोध्या में टैंपो स्टैंड पर शुल्क वसूली के ठेके से नगर निगम को प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की आय होती है इस वर्ष यह ठेका दो करोड़ रुपए में हुआ है टेंपो स्टैंड से करोड़ों की कमाई करने वाले नगर निगम ने स्टैंड पर कोडी भर की सुविधा उपलब्ध नहीं कराई है मूलभूत सुविधाओं की कौन कहे अधिकांश स्टैंड पर यात्री के सिर छुपाने की जगह नहीं है टैंपो चालक ही नहीं यात्रियों के लिए भी यह व्यवस्था चलवा साबित हो रही है टैंपो यूनियन की ओर से कई बार स्टैंड निर्धारित के साथ चिन्हित स्थानों पर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने की मांग की गई लेकिन नगर निगम की ओर से ध्यान नहीं दिया गया वर्तमान में जब अवैध स्टैंड हटाने की प्रक्रिया चल रही है ऐसे में निर्धारित स्टैंड पर यात्री सुविधाएं सुनिश्चित कराने पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है खबर पूरा में स्थित स्टैंड पर पेयजल सुविधा तो दूर की बात यात्री के लिए सेट तक नहीं है टोकन वसूली वाले भी सड़क पर कुर्सी डालकर बैठ रहे हैं यही हाल सहादतगंज में बनी शर्ट पर सेट तो है लेकिन पेयजल की सुविधा नहीं है सात स्टैंड में से अधिकांश स्टैंड पर वर्तमान किराया सूची भी चस्पा नहीं है शौचालय और बैठने की उचित व्यवस्था भी नहीं है वही प्रतिवर्ष घ60 वसूला जाता है नगर निगम को स्टैंड से करोड़ों की कमाई है लेकिन इसके सापेक्ष सुविधाएं ना के बराबर है यात्रियों के साथ टैंपो चालकों को भी परेशानी झेलनी पड़ती है शहर में चढ़ाने की ओर से नगर निगम को ध्यान देना आवश्यक है उक्त बातें अध्यक्ष नेशनल टैंपो टैक्सी स्टैंड यही कहना मनोज प्रजापति उपाध्यक्ष नेशनल टेंपो टैक्सी सेवा समिति ने भी यही बात कही।

सम्पादक मंडल
पं. लाल साहब उपाध्याय (सत्यवेदानन्द जी), बाबा शक्ति नाथ (ज्योतिषाचार्य)श्री विजय कुमार तिवारी, श्री दीपचन्द्र मौर्य (एडवोकेट), श्री सुभाष चन्द्र सेठ,श्री ऋषिकेश द्विवेदी, श्री शिवशंकर तिवारी
प्रमुख कार्यालय– हिन्दी साप्ताहिक " देश की उपासना"
पता–ई 3464,राजाजी पुरम्(निकट मिनी स्टेडियम) लखनऊ उ0प्र0
लखनऊ सम्पादक– श्री पी0सी0श्रीवास्तव मो0 9415545107

स्वात्वाधिकारी की ओर से में0 प्रभुदयाल प्रकाशन के लिए श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव पत्नी श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

सह सम्पादक
श्रीमती हेमा त्रिपाठी
मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI सन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/R-1
deshkiupasanadailynews@gmail.com

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है,समाचार पत्र में प्रकाशित लेख/समाचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नही
समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।